

1. वितरण मानचित्र (Distribution Map)

अभ्यास 1.1 वितरण मानचित्र का परिचय

(1) वितरण मानचित्र (Distribution Map) किसे कहते हैं?

किन्हीं दो अर्थों की किसी उपयुक्त विधि के माध्यम से संश्लेषित देश में अलग-अलग प्रदेशों में या जमीनों के द्वारा प्रदेशों में किमा लागू है उसे वितरण मानचित्र कहते हैं।

(2) वितरण मानचित्र प्रदर्शित करने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं?

इसको प्रदर्शित करने की दो विधियाँ हैं -

① गुणात्मक विधि :->

② गुणात्मक विधि में अर्थों के गुणों के आधार पर प्रदर्शित किमा लागू है

② माशात्मक विधि :->

इस विधि में अर्थों की माशा के आधार पर परिश्रित किमा लागू है।

(3) गुणात्मक विधियाँ कौनसी हैं?

ये विधियाँ चार प्रकार की होती हैं -

① समरूप्य विधि।

② नामात्मक विधि।

③ वर्ण प्रतीक विधि।

④ रंग विधि।

(4) मात्रात्मक विधियाँ कौन सी हैं?

दो प्रकार हैं -

① बिन्दु विधि।

② आलेखी विधि।

③ वर्णमासिक विधि।

④ समान रंग विधि।

(5) वितरण मानचित्र बनाने के लिए किन-किन सूचनाओं और सामग्री की आवश्यकता पड़ती है?

① मानचित्र में प्रदर्शित किए जाने वाली आँकड़ें।

② संश्लेषित प्रदेशों का किसी समक्ष आधार पर बनाया गया मानचित्र।

③ संश्लेषित देशों के मानचित्रों का मानचित्र सामग्री और उसके आवश्यक उपकरण।

(6) वितरण मानचित्र बनाने के लिए मुख्य-मुख्य आलेखी विधियों के नाम लिखो।

① रंग आलेखी विधि।

② रेखीय आलेखी विधि।

③ चिह्न विधय आलेखी विधि।

(7) बिन्दु रेखा व क्षेत्रफल प्रतीकों के रेखा चित्र उदाहरणस्वरूप दर्शाइये।
 नोट : सामने की ड्राइंगशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading (Cartographic Symbols)

1) बिन्दु रेखा :-> इसे रेखा का प्रतीक कहते हैं।
 ये इस्लामिक विधि में होते हैं जिस उपयोग की
 स्याही अंकड़ों की किसी स्थिति पर प्रयोग
 मात्रा आदि की विवरण किया जाता है।

2) रेखा प्रतीक :-> इसे पट्टी प्रतीक भी कहते हैं।
 ये विभिन्न रेखा प्रतीक होते हैं जिसका प्रयोग
 विभिन्न प्रकार के भौगोलिक अंकड़ों को प्रदर्शित
 करने के लिए किया जाता है।
 दूरि से ये प्रतीक के बल रेखा का प्रतीक
 होता है किन्तु धारणात्मक रूप में इसे कुछ न
 कुछ मोटाई अवश्य ही होती है।
 ये प्रतीक रेखीय अंकड़ों के अलावा
 बिन्दु या अक्षयी अंकड़ों को प्रदर्शित करने
 में अत्यन्त हीने हैं।

3) क्षेत्र प्रतीक :-> अनेक रंगों का प्रयोग किया
 जाता है जो किसी मानचित्र में विशेष
 स्थिति का प्रयोग करने समय किसी
 एक विषय के लिए एक ही रंग का
 प्रयोग किया जाता है।

(8) राजस्थान के मानचित्र में फसलों के विवरण को चित्रमय चिन्हों के माध्यम से दर्शाइये।
 नोट : सामने की ड्राइंगशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading - Chorochromatic Method
 Distribution of Crops in Rajasthan

1) नोट :-> कीटा, बाँस, बुंदी, सवाई, अथर्वपुर
 करीली, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जोड़, जगन्नाथ,
 सुमानगढ़, पाली, भीलवाड़ा, उदयपुर

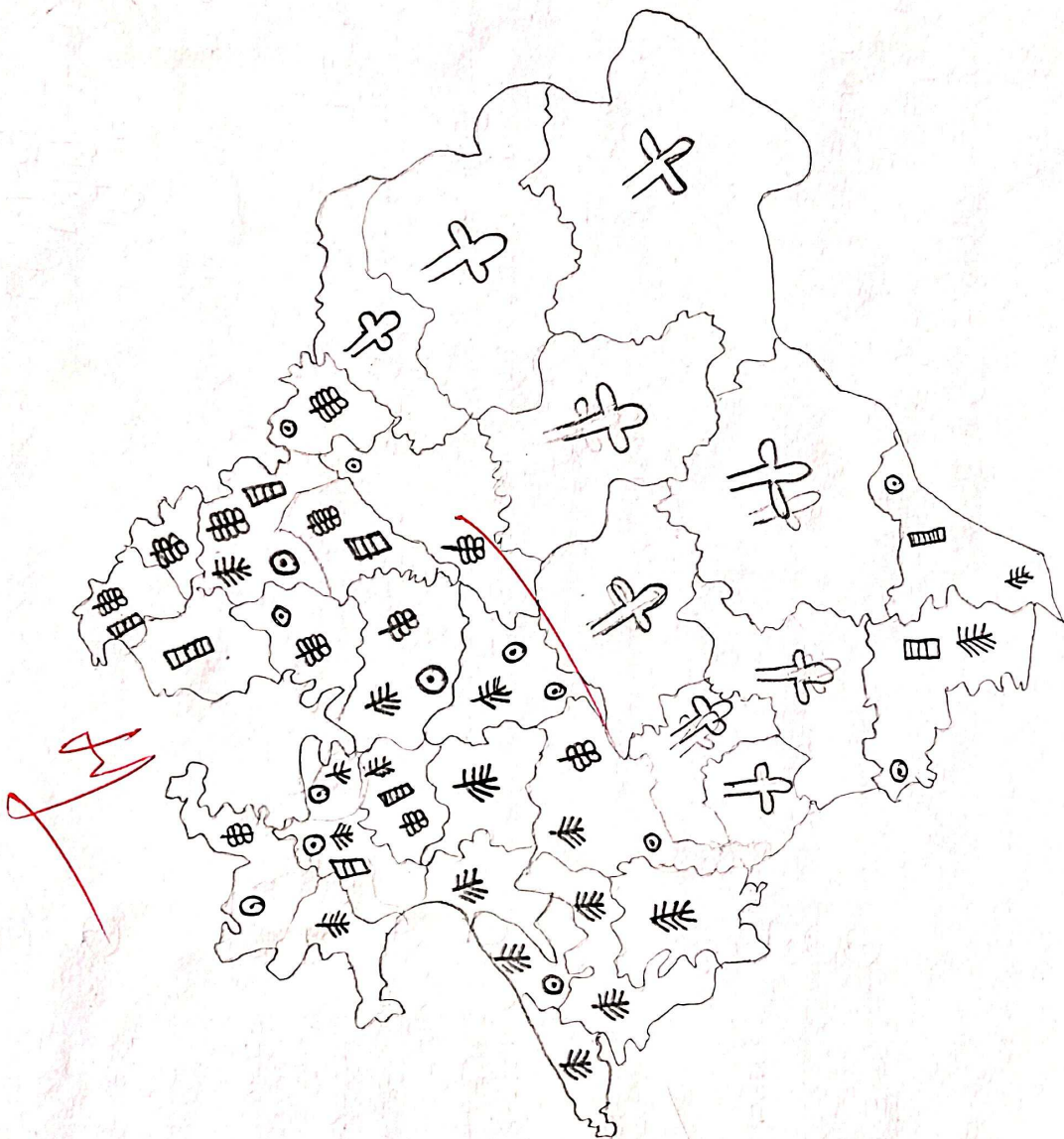
2. भाग्य :-> बाटमौर, जोधपुर, नादी,
 हीसलमौर, बीकानेर।

3. सबका :-> उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा,
 राजसमर, बांसवाड़ा।

4. चना :-> पूर, सुमानगढ़, भरतपुर,
 सीकर, सिराही।

5. धान :-> कोटा, बुन्दी, बांस,
 झालावाड़, करीली, सवाई माधीपुर

CHORDSCHEMATIC METHOD



| | |
|------|-------|
| चक्र | नाम |
| + | बाजरा |
| ॐ | मधु |
| ○ | कृष्ण |
| ॥ | सुख |
| ॥ | सुख |

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

CARTOON GRAPHIC SYMMETRIES

| विन्डु प्रतीक | खण्डक प्रतीक | रेखा प्रतीक | पुनः प्रतीक | चरुणी हल |
|---------------|--------------|-------------|-------------|--------------|
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | चरुणी हल |
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | खण्डक प्रतीक |
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | खण्डक प्रतीक |
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | खण्डक प्रतीक |
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | खण्डक प्रतीक |
| | खण्डक प्रतीक | | पुनः प्रतीक | खण्डक प्रतीक |

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

(9) वितरण मानचित्र बनाने के सामान्य नियम लिखिए।

निष्पत्ति :->

मानचित्र में प्रदर्शित होने का नाम विवरण आवश्यक् होता है जिससे शीर्षक को रूप से विवरण होता है। उदाहरण की प्राप्ति दर्शक व स्थान विवरण वाले अनुविषय होता है जहाँ मानचित्र में प्रयोग किए गए रंग चिह्न व संकेतार्थ आवश्यक होते हैं।

(10) अंकीय मानचित्र किसे कहते हैं ?

अंकीय मानचित्र :->

अंक के आधार पर इसका निर्माण किया जाता है तथा शैक्षणिक सुचना तथा पर इसे विश्लेषण करके बनाया जाता है। अंकीय मानचित्र कहलाता है।

(11) अंकीय मानचित्रों की अनवश्यक लिखिए।

1. जनसंख्या वितरण मानचित्र
2. श्रमि उपमान मानचित्र
3. जनस्थिति मानचित्र
4. पर्यटन केंद्र मानचित्र
5. रविवर वितरण मानचित्र
6. शैक्षणिक मानचित्र

(12) अंकीय मानचित्र का क्या महत्व है ?

अंकीय मानचित्र :->

इसे प्राप्त प्रदर्शक के क्षेत्र के आवृत्त इन्हें समझने से बनाया जाता है। इनके कालक्षण व विशेष की उपलब्ध स्मरण विरहाय जा सकता है।

(13) आँकों का मानचित्रण किसे कहते हैं ?

मानचित्र में दिखाए जाने वाले आँकों की संख्या व विशेष के माध्यम से वितरण मानचित्र में आँकों का स्मरण करने है तथा इन आँकों की विशेषताओं को मानचित्र में ब्याख्या आता है जिससे आँकों का मानचित्रण कहा जाता है।

(14) राजस्थान के मानचित्र में फसलों के वितरण को मूलाक्षर प्रतीक (Literal Symbols) के माध्यम से दर्शाइये।

नोट : सामने की इंग्लिशोटीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading- CHOROSCHEMATIC METHOD
DISTRIBUTION OF CROPS IN RAJASTHAN

- ① गीह :-> कीटा, बांस, कुन्दी, करौली, सवाई, माथीपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, डूंग, पाली।
- ② ज्वार :-> जयपुर, जीवापुर, पाली, रसीकर, अजमेर
- ③ बाजरा :-> बाडमेर, जीवापुर, नागौर, डीसलमेर, बीकानेर।
- ④ धान :-> कीटा, कुन्दी, बारा, करौली, झालावाड़, सवाई, माथीपुर।
- ⑤ मक्का :-> उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, राजसमर।
- ⑥ च्यावल :-> बांसवाड़ा, झारपुर, कीटा, कुन्दी, नागानगर।
- ⑦ चन्ना :-> नागानगर, चुरह, भरतपुर, रसीकर, रिसोडी।
- ⑧ गन्ना :-> बांसवाड़ा, झारपुर, कीटा, झालावाड़।

(15) राजस्थान के मानचित्र में खनिजों के वितरण को ज्यामितीय चिन्हों (Geometrical Symbols) द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

नोट : सामने की इंग्लिशोटीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading- CHOROSCHEMATIC METHOD
DISTRIBUTION OF CROPS IN RAJASTHAN

- ① गीह :-> बीकानेर, चुरह, रसीकर, डूंग, भीलवाड़ा।
- ② मंगीच :-> बांसवाड़ा, उदयपुर, अजमेर, बीर।
- ③ जौह :-> जयपुर, अजमेर, उदयपुर, भीलवाड़ा, रसीकर।
- ④ ज्वार :-> रिसोडी, नागौर।
- ⑤ कीमल :-> बीकानेर, बाडमेर।
- ⑥ मीस :-> बीकानेर, नागौर, चुरह, नागानगर, डीसलमेर, जीवापुर, बाडमेर।
- ⑦ शक कार्बो :-> उदयपुर, डीसलमेर, बाडमेर।
- ⑧ सजागर :-> नागौर, अजमेर, उदयपुर, जयपुर, अजमेर, बांसवाड़ा।

(16) बिन्दु आँकड़े किसे कहते हैं?

बिन्दु आँकड़े :->

वितरण मानचित्र बनाने में बिन्दु आँकड़े किसी धनाकार प्ररतु के किसी धनात्मक व वितरण के आकड़े किसी बिन्दु के द्वारा प्रदर्शित किम आते हैं बिन्दु के आँकड़े किसी नगर की स्थिति स्थानांतरित के कारण कचाड़ी व नगर की जनसंख्या आदि के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

(17) रेखा आँकड़े किसे कहते हैं?

रेखा आँकड़े :->

जब सूच्य की संख्या अधिक होती है तो इनका तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए रेखा बनाने से उसे रेखा आँकड़े कहते हैं।

(18) क्षेत्र आँकड़े किसे कहते हैं?

क्षेत्र आँकड़े :->

वितरण मानचित्र बनाने के लिए मासात्मक विधियों के द्वारा आर्थिक प्ररतु आँकड़े को प्रयोग करने से इन आर्थिक प्ररतु आँकड़े को क्षेत्र विधियों के आँकड़े का प्रदर्शन करने के लिए एक चिह्न क्षेत्र आँकड़े कहते हैं।

(19) बिन्दु प्रतीक क्या होते हैं?

बिन्दु प्रतीक :->

क्षेत्र प्रतीक भी कहते हैं। बिन्दु प्रतीक क्षेत्र के निम्न प्रयोग स्थानिक आँकड़े किसी वितरण का प्ररतु किसी स्थिति पर मासात्मक मासा नगर की जनसंख्या आदि के वितरण से किया जाता है।

(20) रेखा प्रतीक क्या होते हैं?

रेखा प्रतीक :->

इसे पट्टी प्रतीक भी कहते हैं। यह विभिन्न रसिम प्रकार के भौगोलिक आँकड़े को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। रेखा प्रतीक एरिड से यह प्रतीक कुवल रेखा का सूचक होता है किन्तु वास्तविक में आँकड़े को प्रदर्शित करते हैं।

(21) क्षेत्र प्रतीक क्या होते हैं?

क्षेत्र प्रतीक :->

क्षेत्र प्रतीक में अनेक चिह्न-रंगों का प्रयोग प्ररतु आदि का प्रयोग किया जाता है। क्षेत्र प्रतीक क्षेत्र मानचित्र में इन चिह्न का प्रयोग करने समय सामान्यतः एक विशेषता के लिए एक रंग द्वारा प्रयोग प्रयोग किया जाता है।

अध्यास 1.2 बिन्दु मानचित्र (Dot Map)

1. बिन्दु मानचित्र (Dot Map) किसे कहते हैं?
 बिन्दु मानचित्र सामाजिक आर्थिक आंकड़ों की परदर्शन करने का एक माशात्मक विधि है जिससे किसी क्षेत्र या राज्य की विस्तारता अधिकतम प्रदर्शित की जाती है इसके माध्यम से किसी क्षेत्र की जनसंख्या आदि विवरण प्रस्तुत करने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं?

बिन्दु मुख्य विधि का को विधियाँ निम्न हैं
 1) क्षेत्रीय या स्थिति जन्य विधि इसी विधि को भी कहते हैं।
 2) आधारनी विधि (इसके दो प्रकार) भी कहते हैं।

3. बिन्दु विधि के आवश्यक सामग्री का नामोल्लेख कीजिए।

बिन्दु विधि निरिचय करने के लिए निम्न सामग्री आवश्यक होती है।
 1) किसी क्षेत्र या विषय के आंकड़ों/बिन्दु आकार (I) किसी क्षेत्र के आंकड़ों का आधार पर बिन्दु और क्षेत्रों/विधियों की संख्या आता है (II) बिन्दु का निरिचय पोलिसल इलेक्ट्रिसल आदि।

4. बिन्दु मानचित्र के निर्माण की प्रक्रिया बताइये।

बिन्दु मानचित्र बनाने हेतु सर्वप्रथम आंकड़ों के आधार पर पैमाना लेकर बिन्दुओं की संख्या निर्धारित कि जाती है नरपरचयता किसी राज्य विलो आदि सम्बंधित ज्ञान पर बिन्दुओं का अकल किया जाता है।

5. परिचयों राजस्थान में जनसंख्या 2001 के वितरण को बिन्दु (Dot) मानचित्र द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

नोट : सामने की ड्राइंगशीट पर रेखाचित्र बनाइये।
 Heading- WEST RAJASTHAN
 DISTRIBUTION OF POPULATION, 2001

| जिला | बीकानेर | नागौर | पाली | जालौर | बाड़मेर | जोधपुर | जैसलमेर |
|----------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| जनसंख्या | 1673562 | 2773894 | 1819201 | 1448486 | 1963768 | 2880777 | 507999 |

पैमाना = 1 बिन्दु = 1 लाख जनसंख्या

बीकानेर = $\frac{1673562}{1000000} = 16.7$ या 17 बिन्दु

नागौर = $\frac{2773894}{1000000} = 27.7$ या 28 बिन्दु

पाली = $\frac{1819201}{1000000} = 18.19$ या 18 बिन्दु

जालौर = $\frac{1448486}{1000000} = 14.48$ या 14 बिन्दु

बाड़मेर = $\frac{1963768}{1000000} = 19.6$ या 20 बिन्दु

जोधपुर = $\frac{2880777}{1000000} = 28.8$ या 29 बिन्दु

जैसलमेर = $\frac{507999}{1000000} = 50.7$ या 51 बिन्दु

6. समवितरण प्रणाली व असम वितरण प्रणाली में बिन्दु अंकित करते समय किन तथ्यों पर ध्यान रखा जाता है?

- समवितरण प्रणाली व असम वितरण प्रणाली के बिन्दु अंकित करने समय निम्न तथ्यों का ध्यान रखा जाता है -
1. बिन्दुओं की अंकित करने समय उपरोक्त बिन्दु के स्फटन व सरल रेखा से दूर बिन्दु बनाने चाहिए
 2. किसी भी उष्मसि उष्मसि विकिरण के बिन्दु सीमा रेखा समांतर नहीं होना चाहिए
 3. दी उष्मसि विकिरण के बिन्दु से स्फटन व सिन्धता होनी चाहिए

7. बिन्दु मानचित्र के गुण व दोष लिखिए।

बिन्दु मानचित्र के गुण :->

- i. मानचित्र से जनसंख्या फरक 1 तथा पालतू पशुओं आदि के वितरण की रिवाजों का स्फटन है
- ii. बिन्दु मानचित्र के माध्यम से अलग-अलग क्षेत्रों बनाने की सुविधा नहीं पड़ती
- iii. बिन्दु मानचित्र के माध्यम से बिन्दु मानचित्र की परत से सुविधा होती है अतः मानचित्र की स्पष्टता पूर्वक परत जा सकता है
- iv. बिन्दु मानचित्र से किसी परत की धारतविक्रम परत का काकी सीमा तक सुविधा प्रियता करना संभव है।

दोष :->

1. आणव उष्मसि के उष्मसि से समान अकार के बिन्दु बनाना कठिन होता है।
2. विषय की जानकारी व रिसे जमी क्षेत्र के

1. मानचित्र के उष्मसि से स्फटन - 2. मानचित्र बनाना कठिन होता है।

3. बिन्दु अंकित करने की प्रक्रिया में मानचित्र कर्षण करने के कारण की जमीन स्पष्टता की मानचित्र से पड़चाना कठिन होता है
4. बिन्दु मानचित्र की नकल करके उत्तरी प्रतिलिपी बनाना कठिन होता है।

8. बिन्दु विधि को प्रमुख समस्याएँ क्या हैं ?

बिन्दु विधि की समस्याएँ :->

इस विधि के माध्यम से यह कार्य निर्यात आसान रिवाजों से होता नहीं है। इस विधि में कुछ समस्याएँ होती हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. बिन्दु का स्फटन करना :->

इस विधि में मानचित्र की स्फटन और स्फटन मानचित्रकार के द्वारा बिन्दु पर सिद्ध जमीन पर आधारित होता है जो मानचित्र पर बिन्दुओं की संख्या की निर्धारित करता है।

ii. बिन्दु का आकार :-

बिन्दु मानचित्र से बिन्दुओं का आकार निर्धारित करना उत्तरी मुख्य विशेषताओं को दर्शाता है।

iii. बिन्दुओं का अंकन :-

बिन्दु मानचित्र से बिन्दु निर्धारित करने की कोई निर्धारित प्रक्रिया नहीं होती है। अतः बिन्दु निर्धारित की मानचित्र में इस समस्या से सुधारना पड़ता है।

अभ्यास 1.3 वर्णमाला मानचित्र (Choropleth Map)

1. वर्णमाला (Choro pleth) मानचित्र किसे कहते हैं?

वर्णमाला मानचित्र \rightarrow वर्णमाला की उपयोगिता \rightarrow

Choropleth कहते हैं Choropleth शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दो Choros एवं Plethos से मिलकर बना है। Choros का अर्थ स्थान और Plethos का अर्थ माप है अतः सामान्य अर्थ से यह मानचित्र सामाजिक वा आर्थिक आंकड़ों का प्रदर्शन करने की एक मात्रात्मक वर्णमाला मानचित्र के आधार क्या है?

2. वर्णमाला मानचित्र का आधार कितना मानचित्र है?

वर्णमाला मानचित्र का आधार कितना मानचित्र है? वर्णमाला मानचित्र की रचना के लिए किस आधार का उपयोग किया जाता है? इससे प्रशासनिक इकाइयों के आधार पर देशों की भिन्न-भिन्नता को दर्शाया जाता है।

3. वर्णमाला मानचित्र के प्रकार कौन-कौन से हैं?

प्रकार \rightarrow
 1. साधारण
 2. संघन

अन्तर \rightarrow

साधारण वर्णमाला \rightarrow साधारण वर्णमाला मानचित्र में इकाई के द्वारा प्रदर्शित इकाई या संकीर्ण आंकड़ों पर आधारित होता है।
 संघन वर्णमाला \rightarrow इस विधि में प्रदर्शित देशों आपसी आधार से सम्बन्धित होते हैं तथा बड़े मानों के संघन वर्णमाला मानचित्र का उपयोग किया जाता है।

5. निम्नलिखित आँकड़ों के आधार पर भारत का एक वर्णमाला मानचित्र बनाइये।
 नोट : सामने की ड्राइंगशीट पर रेखा चित्र बनाइये।
 (Heading : Choropleth Map)

Statewise Density of India, 1981

| राज्य | घनत्व | राज्य | घनत्व |
|-------------------|-------|-----------------|-------|
| दिल्ली | 4,178 | आंध्रप्रदेश | 194 |
| चण्डीगढ़ | 3,918 | कर्नाटक | 193 |
| लक्षद्वीप | 1,257 | गुजरात | 173 |
| पाँडिचेरी | 1,228 | उड़ीसा | 169 |
| केरल | 654 | मध्यप्रदेश | 118 |
| प. बंगाल | 614 | राजस्थान | 100 |
| बिहार | 402 | हिमाचल प्रदेश | 76 |
| उत्तरप्रदेश | 377 | मणिपुर | 64 |
| तामिलनाडु | 371 | मेघालय | 59 |
| पंजाब | 331 | नागालैण्ड | 47 |
| हरियाणा | 291 | सिक्किम | 44 |
| गोवा, दमन दीव | 284 | अण्डमान निकोबार | 23 |
| असम | 254 | मिजोरम | 23 |
| दादरा व नगर हवेली | 211 | अरुणाचल प्रदेश | 07 |
| महाराष्ट्र | 204 | जम्मू कश्मीर | N.A. |
| त्रिपुरा | 196 | | |

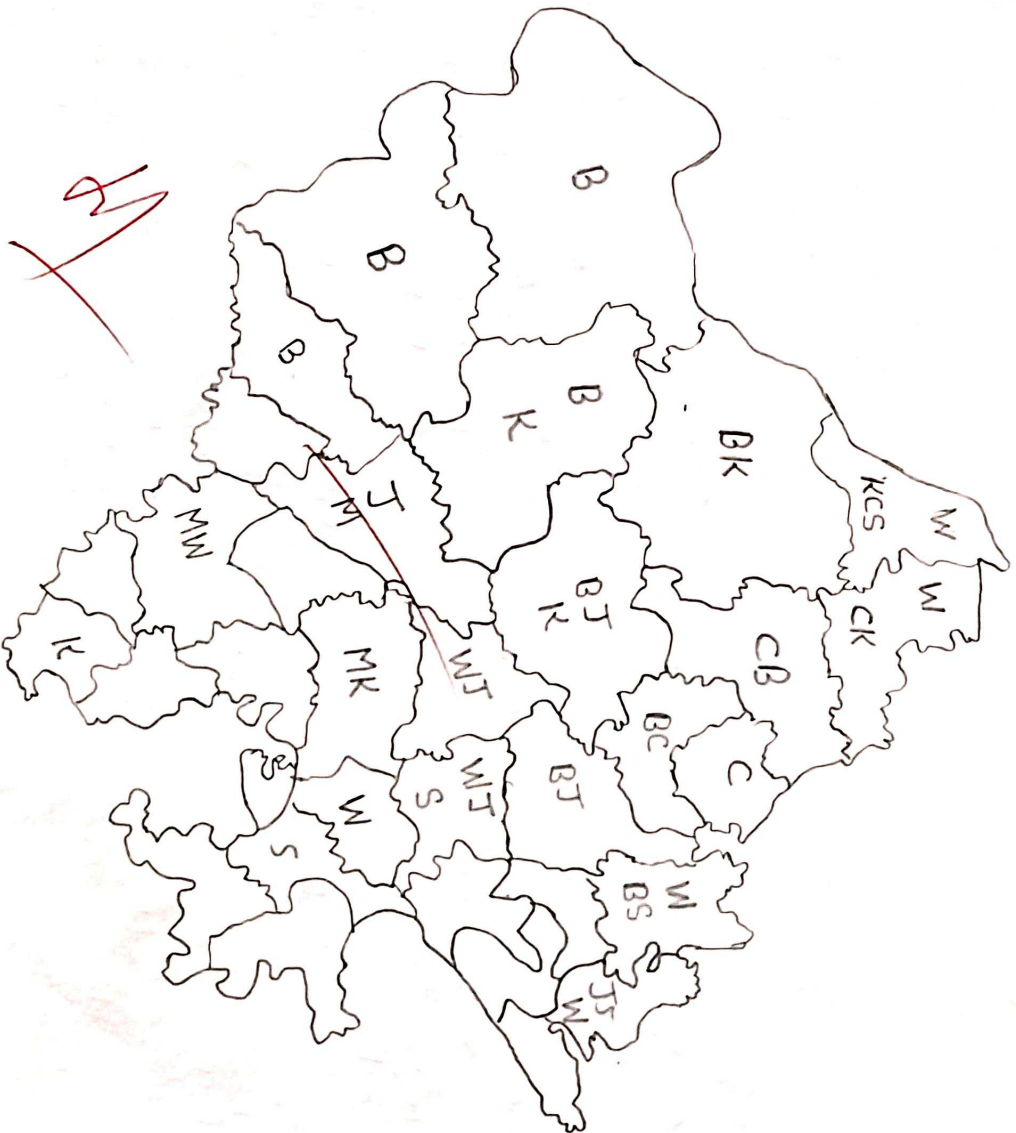
300-400 \rightarrow उच्च घनत्व \rightarrow दिल्ली, चण्डीगढ़, अण्डमान द्वीप, गोवा, दमन दीव, पाँडिचेरी, केरल प. बंगाल, बिहार।

100-200 \rightarrow मध्य घनत्व \rightarrow उत्तर प्रदेश, असम, बिहार, गुजरात, मेघालय, तमिलनाडु, मणिपुर, उत्तराखण्ड, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, त्रिपुरा।

50 से कम \rightarrow निम्न घनत्व \rightarrow हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल, प. बंगाल, बिहार, असम, त्रिपुरा, मिजोरम, सिक्किम, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, पाँडिचेरी, लक्षद्वीप, चण्डीगढ़, दिल्ली।

50 से कम \rightarrow निम्न घनत्व \rightarrow हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल, प. बंगाल, बिहार, असम, त्रिपुरा, मिजोरम, सिक्किम, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, पाँडिचेरी, लक्षद्वीप, चण्डीगढ़, दिल्ली।

LITEROL SYMBOLIS CHOROSCHE -MATIC METHOOD



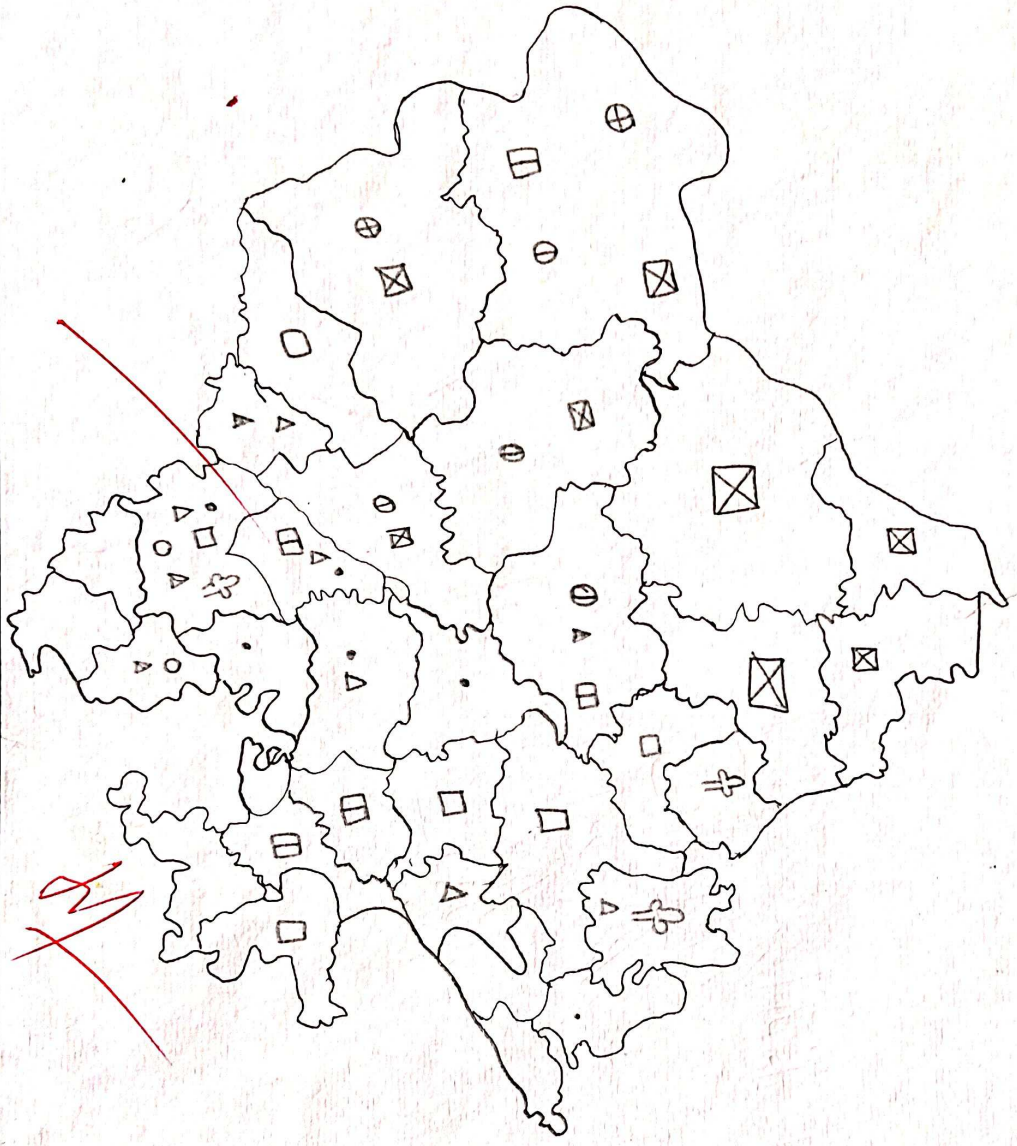
| | |
|---|---|
| W | W |
| M | W |
| K | W |
| B | W |
| T | W |
| D | W |
| S | W |
| W | W |
| W | W |
| W | W |

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

GEOMETRICAL SYMBOLS SCHEMATIC METHOD



| | |
|---|--------------|
| ● | नाम |
| □ | बोझ |
| ○ | प्रतिफल |
| △ | सीसा - अस्ता |
| ⊕ | नाँवा |
| ⊖ | डास्टन |
| ▲ | साँगा |
| • | अभ्यास |
| ⊗ | प्रिप्रम |
| ⊠ | साभरभर |
| ⊕ | रुनिप केल |
| ⊖ | जुना परभर |

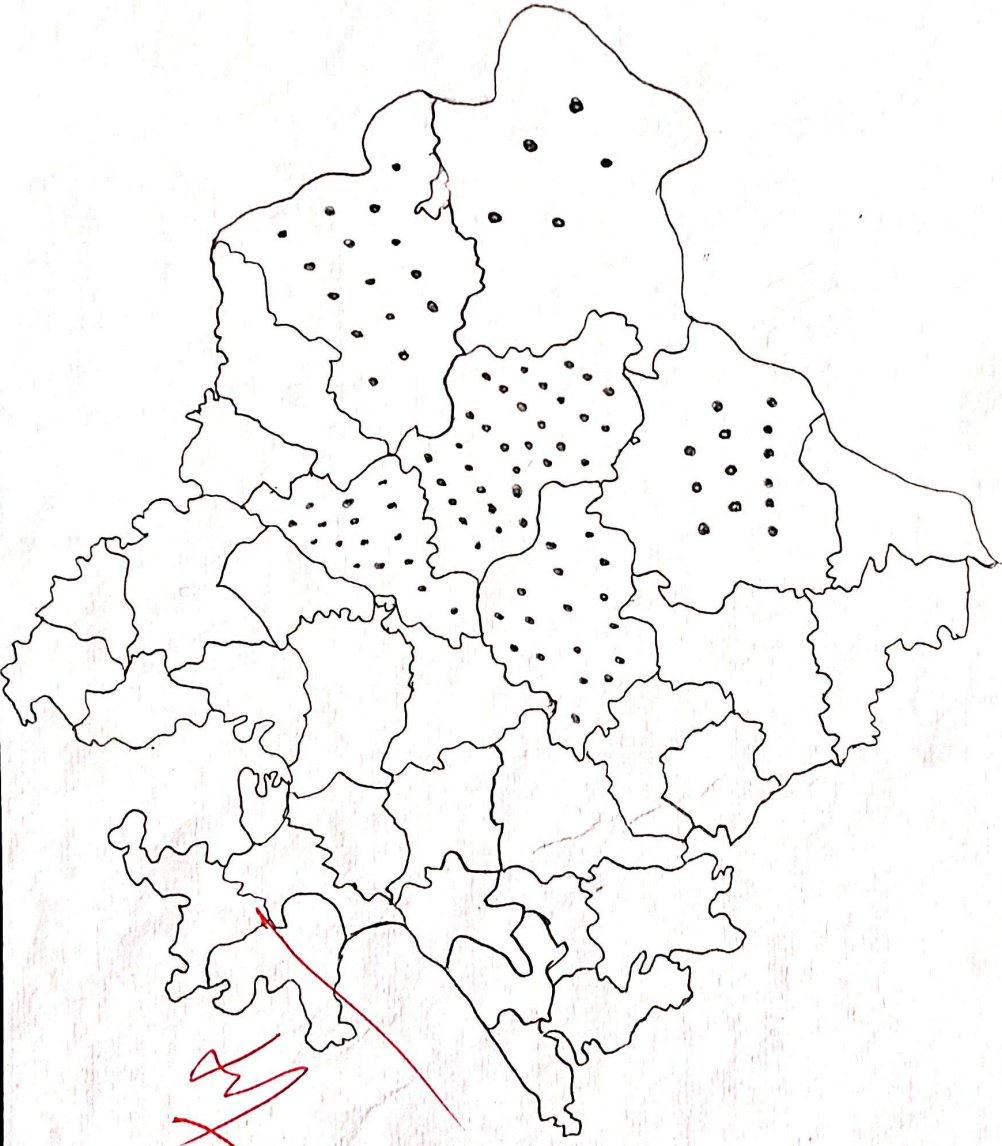
Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

WEST RAJASTHAN DISTRICTS

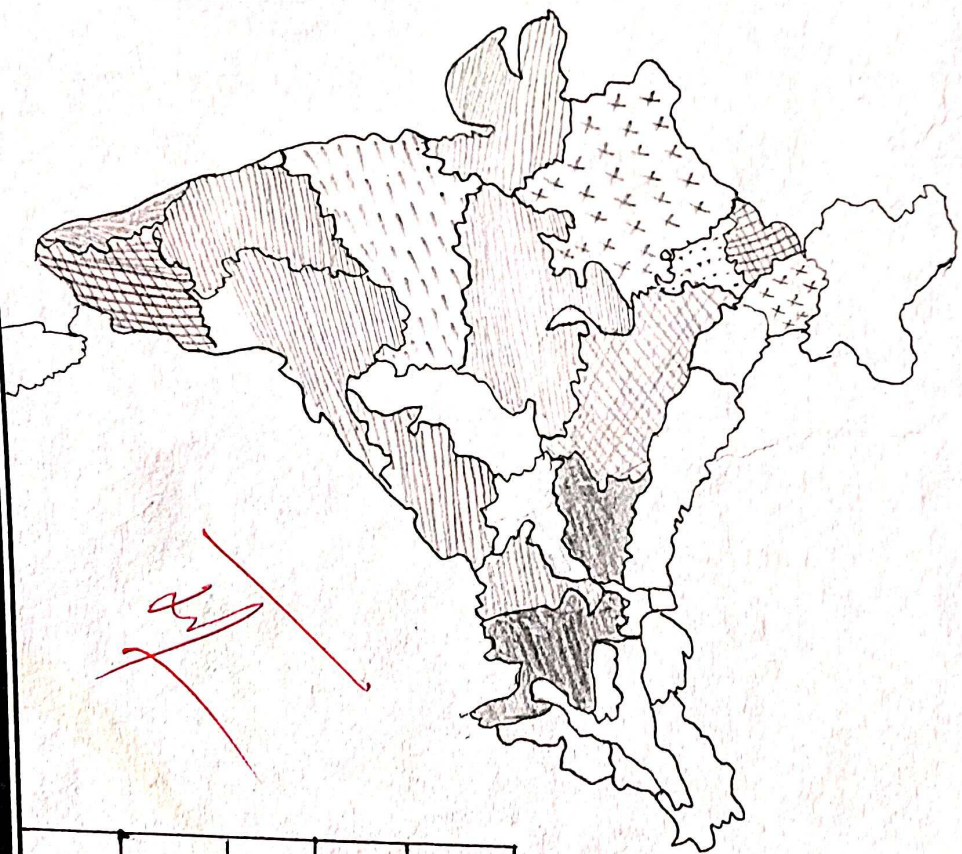
—(ON) OF POPULATION 2001








① = 10,000 (संख्या)

Student Name..... Roll No. Class Date Signature.....

CHHOROLETH MAP



Handwritten signature in red ink

| | |
|---|------------------|
|  | 400 ರ 500 ರವರೆಗೆ |
|  | 201-400 ರವರೆಗೆ |
|  | 201-300 ರವರೆಗೆ |
|  | 101-200 ರವರೆಗೆ |
|  | 100 ರ ಕ್ಕೆ ಕಡಿಮೆ |

Date

Signature.....

Student Name.....

Roll No. Class

2. आरेख (DIAGRAM)

अभ्यास 2.1 आरेख परिचय

1. आरेख (Diagram) किसे कहते हैं?

आरेख :->

आरेख एक सुदृशी होती है जिसके माध्यम से कठिन व निश्चय ग्रहण करने वाले शारीरिक अंकुशों को न केवल सरल समझ योग्य व आकर्षक बना से पर्यवेक्षण किया जा सकता है। उपरि इनकी समस्त विशेषताओं को खिना संभारना अधिक सुगम होता है।

2. आरेख (Diagram) कितने प्रकार के हैं? बताइये।

आरेख तीन प्रकार के होते हैं।

1. एक विमीय आरेख।
2. द्वि-विमीय आरेख।
3. त्रि-विमीय आरेख।

3. आरेख व आलेख में अन्तर बताइये।

आरेख आलेख में अन्तर :-

आरेख एक ही भाषा आरेख एक विधि होती है। जिसका उपयोग करने के उपरान्त लाभकारी की वृद्धि उद्योगों के उत्पादन को बढ़ावा देता है। इससे सम्बन्धित कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

4. एकविमीय आरेख (One Dimensional) आरेख किसे कहते हैं?

एकविमीय आरेख :-

जिन आरेखों की रचना में केवल एक ही भाषा या आरेखों की भाषाओं के अनुसार गठन होती है उसे एक विमीय आरेख कहते हैं।

उदाहरण :- 1. एक आरेख (I) पिरामिड आरेख (II) आधार आरेख (IV) अक्ष आरेख आदि

5. द्विविमीय आरेख (Two Dimensional) किसे कहते हैं?

द्विविमीय आरेख :->

एक ही विस्तार की धागा गाना है द्विविमीय आरेखों में सम्बन्धित व चौड़ाई दोनों की गणना की जाती है। द्विविमीय आरेख कहते हैं।

6. त्रिविमीय आरेख किसे कहते हैं?

त्रिविमीय आरेख :-

त्रिविमीय आरेखों में सम्बन्धित चौड़ाई के साथ-साथ ऊँचाई का भी उपयोग किया जाता है। इन आरेखों में त्रि-आयामी आरेखों की रचना आरेख, रचना आरेख वट आदि आरेखों के आयतन के अनुपात में पर्यवेक्षण करने से अतः इस आयतन आरेखों को बढ़ाने में सहायता मिलती है।

7. प्रमुख एकविम आरेखों के उदाहरण दीजिए।

एकविम आरेखों के उदाहरण :->

- (1) मिश्रित एक आरेख।
- (2) पिरामिड आरेख।
- (3) धर्मापरिनिष्ठा आरेख।
- (4) अन्त आरेख।
- (5) शरीर आरेख।

8. द्विविम आरेखों के उदाहरण दीजिए।

- (i) इकाई धर्मापरिनिष्ठा आरेख।
- (ii) धर्मापरिनिष्ठा आरेख।
- (iii) अन्त आरेख।
- (iv) विलिप्त आरेख।

9. त्रिविमीय आरेखों के उदाहरण दीजिए।

- (1) त्रिविमीय आरेखों के उदाहरण :-
- (2) धर्मापरिनिष्ठा आरेख।
- (3) अन्त आरेख।

10. आरेखों का क्या महत्व है? समझाइये।

आरेखों का महत्व :-

गुणों में जनसंख्या का सार उपादान आदि से सम्बन्धित आरेखों में आंकड़ों की दृष्टि से आरेखों को गुणों का किमा आना है इन आंकड़ों की आंकड़ों के माध्यम से धर्म करने में आरेखों की माध्यम से जटिल आंकड़ों को सरल रूप में आरेखों से आसानी से किमा आ सकता है आंकड़ों के माध्यम से एक धर्म गुणात्मक रूप से आसानी से किमा आ सकता है आरेखों के माध्यम से किमा आना है आसानी से किमा आना है

अध्यास 2.2 वृत्तरेख (Circle Diagram)

1. वृत्तरेख से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर: वृत्तरेख :->

वृत्तरेख की एक आरेख भी कहते हैं। एक आरेख में किसी को दिए गए मूल्य के अनुपात में उसी प्रकार एक चक्र बनाया जा सकता है। इस प्रकार बनाया गया आरेख में करने के लिए वृत्तरेख से संख्या को कुल धन्यता तक करने वाली किसी इन के संख्या को मूल धन्यता के अनुपात के विभिन्न उप-विभागों के मूल्यों के अनुपात में बांटने से आरेख की विभाजित इन आरेख की कहते हैं।

2. वृत्तरेख निर्माण की क्या प्रक्रिया है? समझाइये।

उत्तर: वृत्तरेख की प्रक्रिया :->

वृत्तरेख बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार है: सुविधापूर्वक की जाएगी अक्षयक्षेत्र से एक रीषक संख्या के कुल योग की प्रदर्शित करने हैं इसके बाद उस संख्या के अक्षय-क्षेत्र उप-विभागों की मिनट करने हैं।

उपविभागों से अक्षय का भाग :->

उपविभाग का वास्तविक मूल्य * 360

उपविभाग का प्रतिशत से मूल्य * 36

100

3. निम्नलिखित आंकड़ों को वृत्तरेख के द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

नोट : सामने की दृष्टिकोण पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : Circle Diagram

Population of Some Countries, 2004

| देश | जर्मनी | ग्रेटब्रिटेन | इटली | फ्रांस | स्पेन | चीन | दोहा | यूनान | बेल्जियम |
|--------------------|--------|--------------|------|--------|-------|-----|------|-------|----------|
| जनसंख्या (लाख में) | 82 | 62 | 67 | 57 | 56 | 37 | 36 | 10 | 10 |

किसी उपविभाग अक्षय का भाग उपविभाग का मूल्य

उपविभाग का प्रतिशत से मूल्य * 360

जर्मनी :-> $\frac{82}{100} \times 360 \rightarrow 295.2$

ग्रेटब्रिटेन :-> $\frac{62}{100} \times 360 \rightarrow 223.2$

इटली :-> $\frac{67}{100} \times 360 \rightarrow 241.2$

फ्रांस :-> $\frac{57}{100} \times 360 \rightarrow 205.2$

स्पेन :-> $\frac{56}{100} \times 360 \rightarrow 201.6$

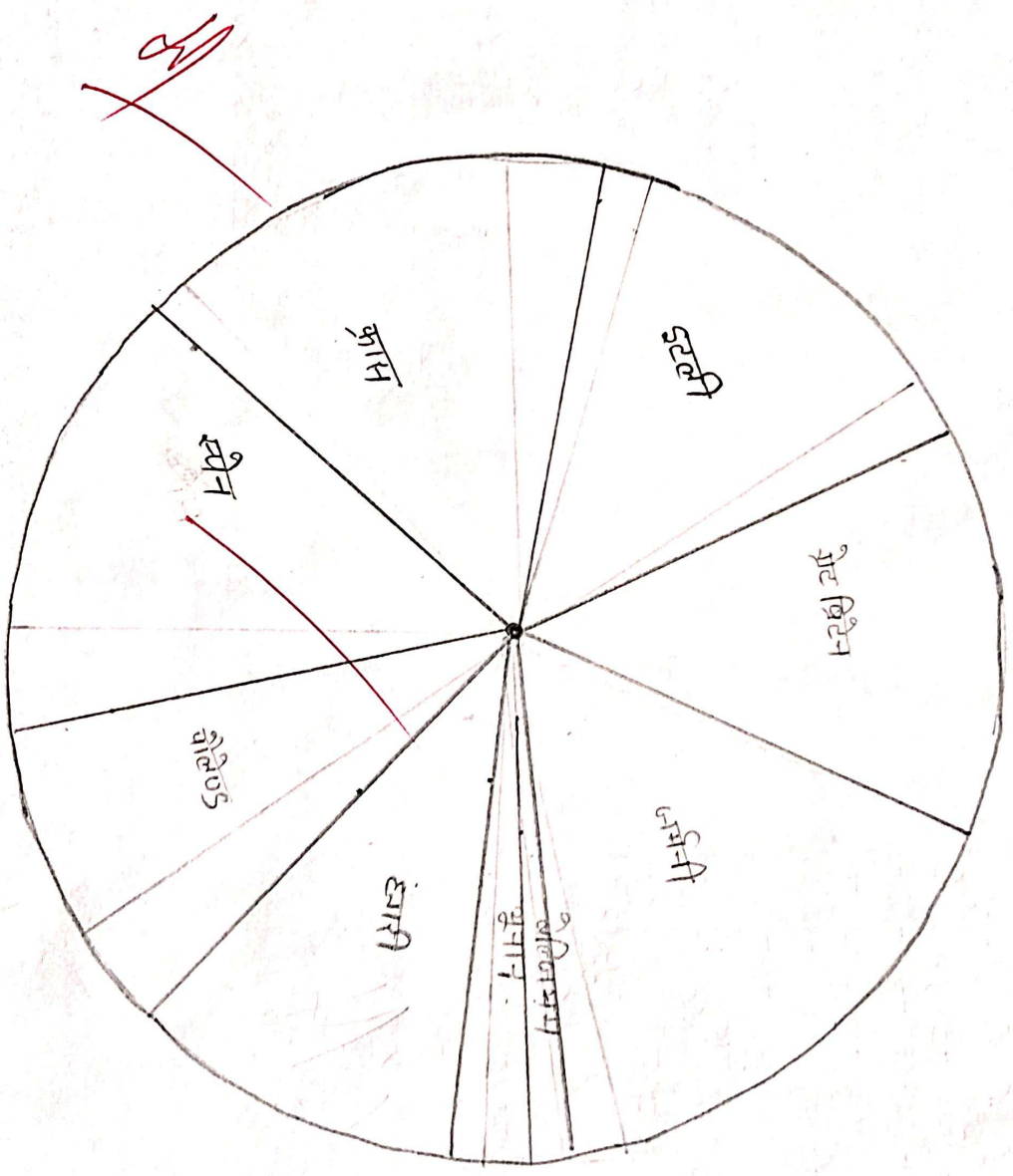
चीन :-> $\frac{37}{100} \times 360 \rightarrow 133.2$

दोहा :-> $\frac{36}{100} \times 360 \rightarrow 129.6$

यूनान :-> $\frac{10}{100} \times 360 \rightarrow 36$

बेल्जियम :-> $\frac{10}{100} \times 360 \rightarrow 36$

CIRCLE DIAGRAM



Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

- अध्यास 2.3 पिरामिड आरेख (Pyramid Diagram)
1. पिरामिड आरेख किसे कहते हैं?

पिरामिड आरेख :- इसी समूह आरेख की कटा
 ...नाता है। पिरामिड के सामान आकृति होने
 ...के कारण इस आरेख का नाम पिरामिड
 ...आरेख कटा है। आयु वर्गों के अनुसार
 ...जनसंख्या या साक्षरता की प्रकृति करने के
 ...लिए के इस प्रकार के आरेख जनता है। पिरामिड
 ...आरेख में पहले पर भाग में आयु वर्गों
 ...के अंकी की लम्बाई का समय से नीचे से
 ...ऊपर की और आगे हिस्से में लंबाई का
 ...है। यह - पश्चान वर्गों के आयु वर्गों के समय
 ...एक और पुरुष व इसकी और महिलाओं
 ...की संख्या सूची की जापनी के आधार
 ...पर प्रकट करने है।

2. पिरामिड आरेख के क्या उपयोग हैं? बताइये।

पिरामिड आरेख का उपयोग :- पिरामिड
 ...आरेख में मुख्यतः किसी क्षेत्र की जनसंख्या
 ...व्याप, साक्षरता तथा शिक्षा पर राज्य के
 ...समानता आकृति का जनसांख्यिक अध्ययन
 ...करने हेतु पिरामिड आरेख के माध्यम
 ...से आकृति समझाने का अध्ययन होती है।
 ...है। तथा यह जनसांख्यिक अध्ययन हेतु
 ...सर्वोपर आरेख माना जाता है।

3. पिरामिड आरेख के प्रकार बताइये।

पिरामिड आरेख के प्रकार :-
 ...पर सामान्यतः पिरामिड आरेख तीन
 ...प्रकार के होते हैं।
 1. साधारण पिरामिड आरेख
 2. अध्यापित पिरामिड आरेख
 3. मिश्रित पिरामिड आरेख

4. मिश्रित पिरामिड आरेख किसे कहते हैं?

मिश्रित पिरामिड :-
 ...आयु वर्गों के समय - साक्षरता के
 ...जनसंख्या वृद्धि साक्षरता इत्यादि का जनसांख्यिक
 ...अध्ययन करने हेतु मिश्रित पिरामिड आरेख
 ...व्याप का है। मिश्रित पिरामिड आरेख की
 ...संख्या सीटीनुमा होती है।

5. निम्नलिखित आँकड़ों को सहायता से पिरामिड आरेख की रचना कीजिए।

नोट : सामने की इकाईयों पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : Pyramid Diagram

Population By Age and Tamilnadu, 2001

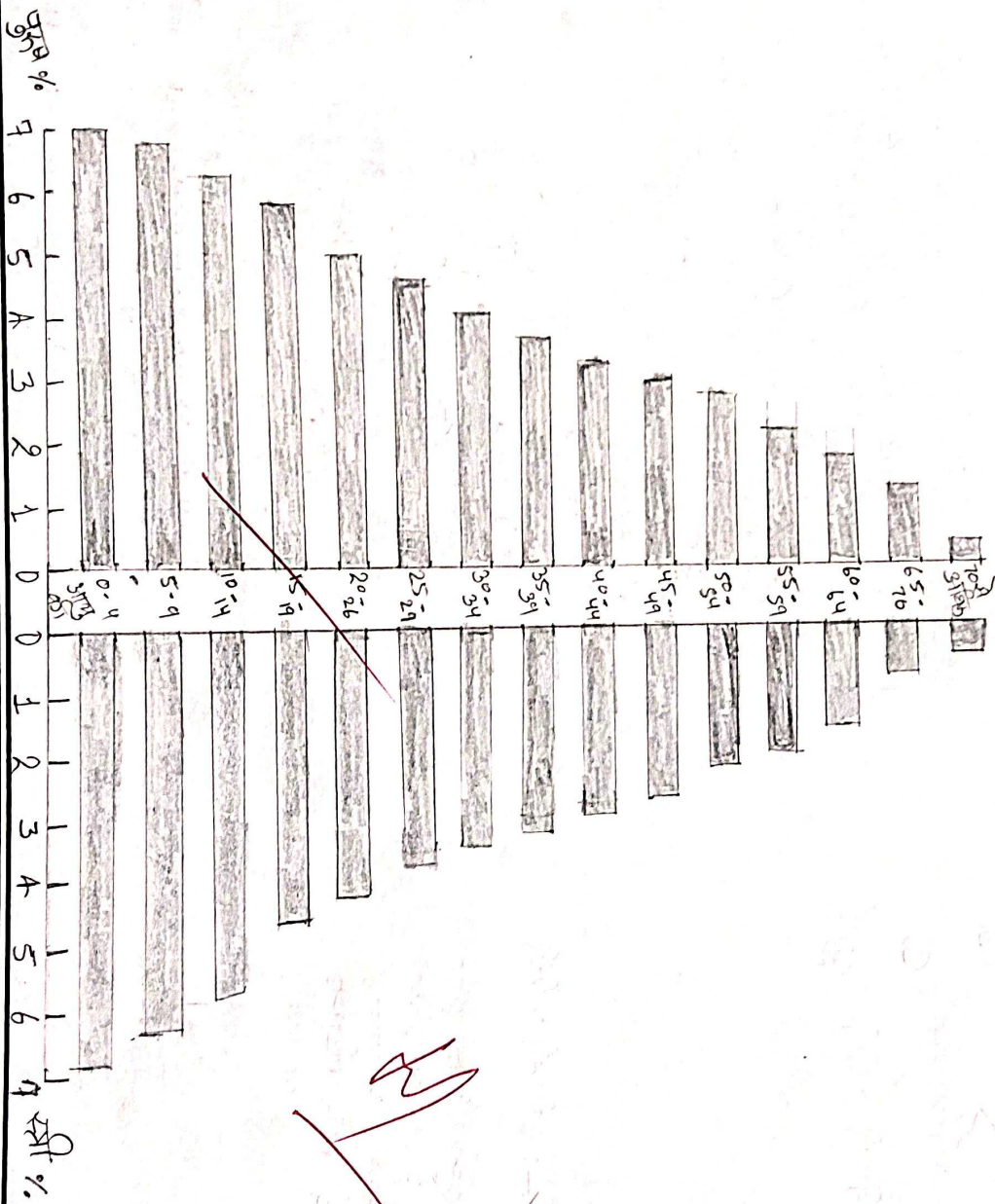
| आयु वर्ग | कुल जनसंख्या% | | कुल जनसंख्या% | |
|----------|---------------|--------|---------------|--------|
| | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |
| 0-4 | 7.0 | 6.8 | 3.0 | 2.6 |
| 5-9 | 6.8 | 6.3 | 2.6 | 2.2 |
| 10-14 | 6.2 | 5.5 | 2.1 | 1.8 |
| 15-19 | 5.8 | 4.4 | 1.6 | 1.4 |
| 20-24 | 4.7 | 4.3 | 1.1 | 1.0 |
| 25-29 | 4.6 | 3.5 | 1.0 | 0.7 |
| 30-34 | 3.9 | 3.4 | 0.1 | 0.1 |
| 35-39 | 3.4 | 3.0 | | |

पिरामिड आरेख की संरचना :-

पिरामिड आरेख
पुरुषों के लिए प्रथम दिशि नाम आधु वरि
को एक की उपाध कोलम में नीचे से कोप
कि ऊपर और सामान्य रूप से ऊपर की ओर
निरवर्तित है इसकी प्रथम पर मरणा की
प्रयोग का एका से रहने हुए उपाध कोलम
की नीचे आधार रहने पर दीर्घ और
आपनी चिह्न को अंकित करने है जो अणु प्रथम
आधु से सामान्य एक और इस प्रकार के
प्रकृषी के प्रथम प्रथम रहने हुए
इसरी तरह उस चोरी चोरी चोरी
इसके चोरी चोरी चोरी चोरी
चोरी चोरी चोरी चोरी



PSYCHOMEDICAL AGRAVA PROPLICATION BY AGE AND TAMILNADU 2011



1 Cm = 1%

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

अभ्यास 2.4 विभाजित वृत्तरेख (Divided Circle)

(कृषि सम्बन्धी आँकड़ों का चित्रण)

1. विभाजित वृत्त किसे कहते हैं?

विभाजित वृत्त :->

किसी वृत्त आरेख में कुल क्षेत्रफल में किसी एक अनुपात में विभाजित कर दिया जाता है उसी प्रकार वृत्त आरेख की कुल धीमा एकट करने वाले किसी वृत्त के क्षेत्र को उस संख्या के विधि उप विभागी के संख्या के अनुपात में बाँट देने से विभाजन के कारण उसे विभाजित वृत्त कहते हैं। यदि मूल्यों में दिया जाता है तो प्रत्येक प्रतिशत मूल्य का मान अशा में कैसे ज्ञात करेंगे?

यदि मूल्यों की प्रतिशत में दिया जाता है तो

$$100 \times \frac{\text{अंश}}{\text{कुल}} = \text{मूल्य}$$

$$100 \times \frac{360}{100} = 360$$

3. यदि मूल्यों को प्रतिशत में दिया गया है तो प्रत्येक उपविभाग का अंशों में मान कैसे ज्ञात करेंगे?

जब किसी वृत्त की प्रतिशत में दिया जाता है तो उपविभाग का अंशों में मान निकालने के लिए उपविभाग संख्या के मान को 360 का गुणन करने समुचित संख्या के अंशों को विभाजित कर देंगे।

$$\text{उपविभागी का मान} \times 360$$

$$\frac{\text{संख्या}}{\text{कुल}} \times 360$$

4. निम्नलिखित आँकड़ों को विभाजित वृत्त आरेख के द्वारा प्रदर्शित कीजिए।
 नोट: सामने की दृष्टीरेख पर रेखचित्र प्रदर्शित कीजिए।

Heading : Divided Circle
 Land Utilization of Rajasthan, 2000-01

| क्र.सं. | भूमि का वर्गीकरण | क्षेत्रफल (कोड़ हेक्टेयर) |
|---------|-----------------------------------|---------------------------|
| 1 | वन | 6.68 |
| 2 | कृषि के लिए अग्रण | 3.25 |
| 3 | परती के अतिरिक्त अन्य अकृष्य भूमि | 3.36 |
| 4 | परती भूमि | 2.40 |
| 5 | कृष्य भूमि | 14.02 |

$$6.68 + 3.25 + 3.36 + 2.40 + 14.02 = 29.71$$

1 वन
$$= \frac{6.68}{29.71} \times 360 = 80.94 \text{ या } 81$$

2 कृषि के लिए अग्रण
$$= \frac{3.25}{29.71} \times 360$$

$$= 39.38 \text{ या } 34$$

3 परती के अतिरिक्त अन्य अकृष्य भूमि
$$= \frac{3.36}{29.71} \times 360$$

$$= 40.71 \text{ या } 41$$

4 वृत्त भूमि
$$= \frac{14.02}{24.71} = 980$$

$$= 169.88 \text{ या } 170$$

**अध्यास 2.5 नगरीय-ग्रामीण जनसंख्या
(Urban-Rural Population)**

1. राजस्थान के मानचित्र में ग्रामीण व प्रमुख नगरों की जनसंख्या को बिन्दु विधि द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| क्र.सं. | जिले का नाम | ग्रामीण जनसंख्या (लाख में) | प्रमुख नगरों की जनसंख्या (लाख में) |
|---------|-------------|-------------------------------|---------------------------------------|
| 1. | श्रीगंगानगर | 13.36 | 4.52 |
| 2. | हनुमानगढ़ | 12.14 | 3.3 |
| 3. | बीकानेर | 10.79 | 5.95 |
| 4. | चुरू | 13.17 | 5.36 |
| 5. | झुंझरू | 15.18 | - |
| 6. | अलवर | 25.56 | 4.37 |
| 7. | भरतपुर | 16.90 | - |
| 8. | जोधपुर | 8.06 | - |
| 9. | कौशली | 1.72 | - |
| 10. | सवाईमाधोपुर | 9.03 | - |
| 11. | दौसा | 11.81 | - |
| 12. | जयपुर | 25.58 | 25.94 |
| 13. | सीकर | 18.15 | - |
| 14. | नागौर | 22.97 | 4.77 |
| 15. | धौलपुर | 19.9 | 9.72 |
| 16. | जैसलमेर | 4.31 | 0.77 |
| 17. | बाड़मेर | 18.19 | 1.45 |
| 18. | जालौर | 13.38 | - |
| 19. | सिसोही | 7.00 | - |
| 20. | पाली | 14.98 | - |
| 21. | अजमेर | 13.07 | 8.74 |

| | | | |
|-----|-------------|-------|------|
| 22. | टोंक | 2.53 | - |
| 23. | बूंदी | 7.82 | - |
| 24. | भिलवाड़ा | 15.95 | - |
| 25. | राजसमंद | 8.57 | - |
| 26. | उदयपुर | 14.90 | 4.90 |
| 27. | झुंजारपुर | 10.27 | - |
| 28. | बांसवाड़ा | 13.93 | - |
| 29. | चित्तौड़गढ़ | 15.14 | - |
| 30. | कोटा | 7.31 | 8.38 |
| 31. | बांरा | 8.50 | - |
| 32. | झालावाड़ | 10.12 | - |

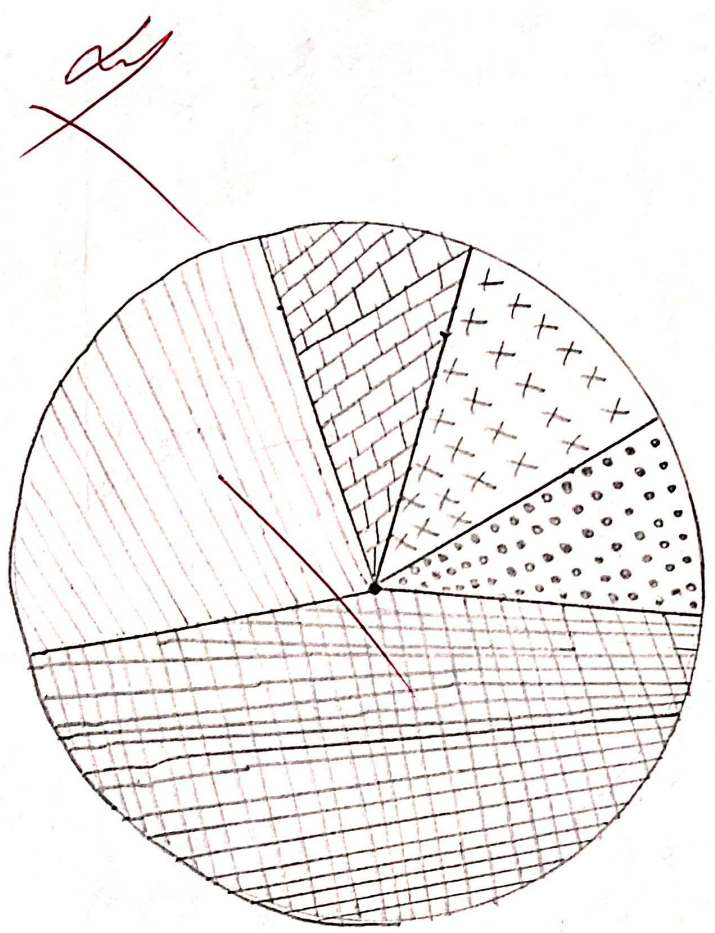
नोट : सामने की ड्राईशीट पर रेखाचित्र बनाइये।




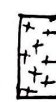

Heading : Dot Method

Rural & Urban Population of Rajasthan, 2001

विश्वीय विधि से जनसंख्या को
प्रदर्शित करने के लिए सर्वप्रथम
इस मापक को निर्धारित सदैव सफल
मान करके जनसंख्या को दर्शाया जाता
है। मापक जनसंख्या के प्रतिशत
प्रतिशत है।
राजस्थान के मानचित्र में ग्रामीण व
प्रमुख नगरों की जनसंख्या को बिन्दु विधि
द्वारा दर्शाया गया है। इसमें ग्रामीण
जनसंख्या को छोटे बिन्दुओं द्वारा
दर्शाया गया है और प्रमुख नगरों
की जनसंख्या को बड़े बिन्दुओं द्वारा
दर्शाया गया है।

DIVIDED CIRCLE (ANNI)



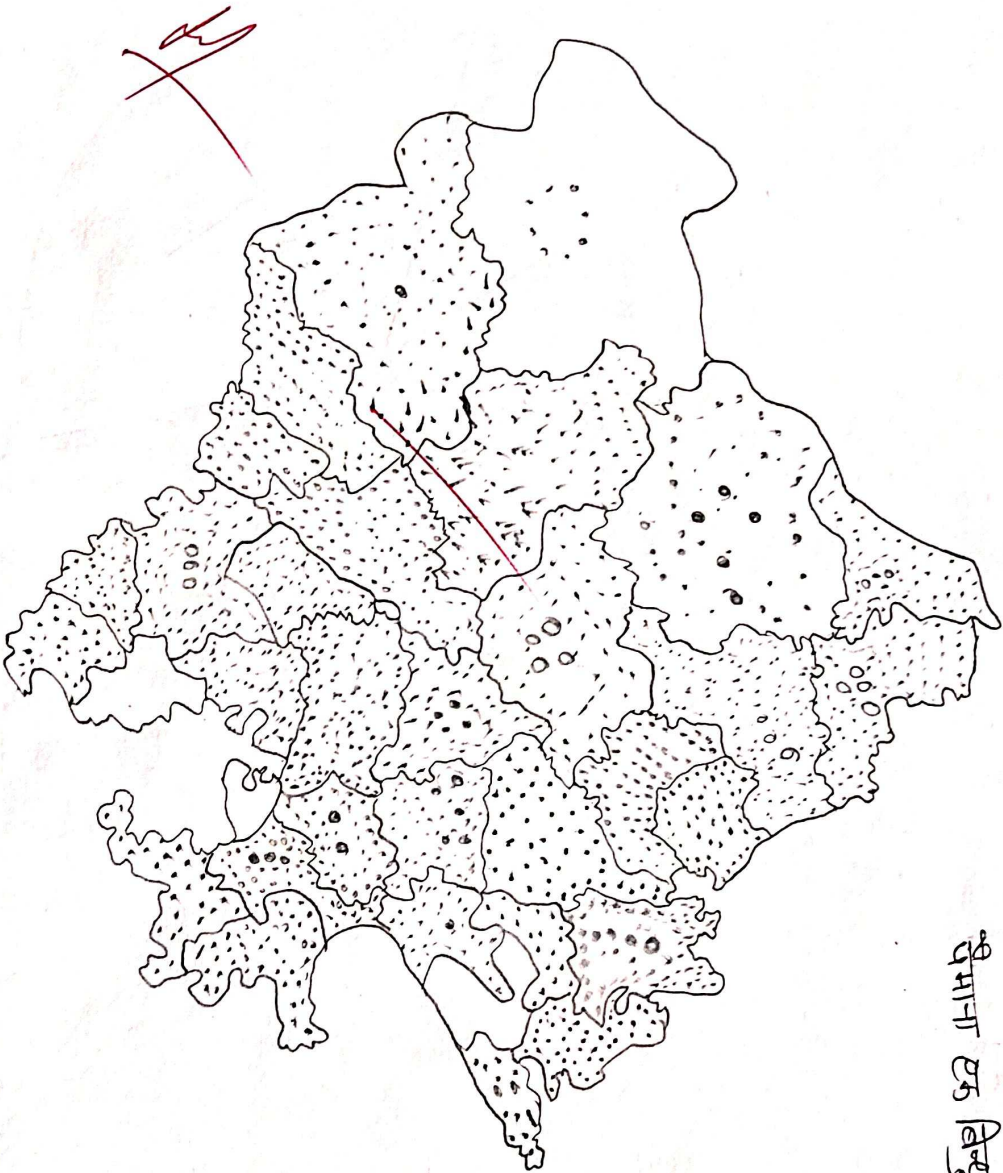
| रंग | नाम |
|---|----------------------------------|
|  | बसी ग्रीन |
|  | कल ग्रीन |
|  | बन |
|  | करी के अतिरिक्त अन्य अष्टक ग्रीन |
|  | श्री के लिए असाद |

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

DOT METHOD FOR RURAL SURVEY



समान एक बिंदु (.) = 1 चौख

- क्षेत्र
- गाँव
- जंगल

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

2. राजस्थान के मानचित्र में ग्रामीण व प्रमुख नगरों की जनसंख्या का वृत्तआरेख द्वारा ड्राईगशीट पर प्रदर्शित कीजिए।

| क्र.सं. | जिले का नाम | ग्रामीण जनसंख्या (लाख में) | प्रमुख नगरों की जनसंख्या (लाख में) |
|---------|-------------|-------------------------------|---------------------------------------|
| 1. | श्रीगंगानगर | 13.36 | 4.52 |
| 2. | हनुमानगढ़ | 12.14 | 3.3 |
| 3. | बीकानेर | 10.79 | 5.95 |
| 4. | चुरू | 13.17 | 5.36 |
| 5. | झुंझरू | 15.18 | - |
| 6. | अलवर | 25.56 | 4.37 |
| 7. | भरतपुर | 16.90 | - |
| 8. | जोधपुर | 8.06 | - |
| 9. | करौली | 1.72 | - |
| 10. | सवाईमाधोपुर | 9.03 | - |
| 11. | दौसा | 11.81 | - |
| 12. | जयपुर | 25.58 | 25.94 |
| 13. | सीकर | 18.15 | - |
| 14. | नागौर | 22.97 | 4.77 |
| 15. | धौलपुर | 19.9 | 9.72 |
| 16. | जैसलमेर | 4.31 | 0.77 |
| 17. | बाड़मेर | 18.19 | 1.45 |
| 18. | जालौर | 13.38 | - |
| 19. | सिरोही | 7.00 | - |
| 20. | पाली | 14.98 | - |
| 21. | अजमेर | 13.07 | 8.74 |
| 22. | टोंक | 2.53 | - |

| | | | |
|-----|-------------|-------|------|
| 23. | बूंदी | 7.82 | - |
| 24. | भीलवाड़ा | 15.95 | - |
| 25. | राजसमंद | 8.57 | - |
| 26. | उदयपुर | 14.90 | 4.90 |
| 27. | झुंझपुर | 10.27 | - |
| 28. | बांसवाड़ा | 13.93 | - |
| 29. | चित्तौड़गढ़ | 15.14 | - |
| 30. | कोटा | 7.31 | 8.38 |
| 31. | बारं | 8.50 | - |
| 32. | झालावाड़ | 10.12 | - |

नोट : सामने की ड्राईगशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : Circle Diagram
Rural & Urban Population of Rajasthan, 2001

राजस्थान के ग्रामीण व प्रमुख नगरों की जनसंख्या का वृत्तआरेख द्वारा ड्राईगशीट पर प्रदर्शित किया गया है। इस आरेख से हमें ग्रामीण जनसंख्या और प्रमुख नगरों की जनसंख्या का अंतर स्पष्ट हो सकता है।

ग्रामीण जनसंख्या का अंतराल 1.72 (करौली) से 25.58 (जयपुर) तक है। प्रमुख नगरों की जनसंख्या का अंतराल 0.77 (जैसलमेर) से 25.94 (जयपुर) तक है।

जयपुर नगर की जनसंख्या 25.94 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 25.58 लाख से अधिक है।

अजमेर नगर की जनसंख्या 8.74 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 13.07 लाख से अधिक है।

जोधपुर नगर की जनसंख्या 8.06 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 16.90 लाख से अधिक है।

सिरोही नगर की जनसंख्या 7.00 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 7.00 लाख से अधिक है।

जालौर नगर की जनसंख्या 13.38 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 13.38 लाख से अधिक है।

बाड़मेर नगर की जनसंख्या 1.45 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 18.19 लाख से अधिक है।

धौलपुर नगर की जनसंख्या 9.72 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 19.9 लाख से अधिक है।

नागौर नगर की जनसंख्या 4.77 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 22.97 लाख से अधिक है।

सीकर नगर की जनसंख्या 18.15 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 18.15 लाख से अधिक है।

जैसलमेर नगर की जनसंख्या 0.77 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 4.31 लाख से अधिक है।

बाड़मेर नगर की जनसंख्या 1.45 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 18.19 लाख से अधिक है।

जालौर नगर की जनसंख्या 13.38 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 13.38 लाख से अधिक है।

सिरोही नगर की जनसंख्या 7.00 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 7.00 लाख से अधिक है।

पाली नगर की जनसंख्या 14.98 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 14.98 लाख से अधिक है।

अजमेर नगर की जनसंख्या 8.74 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 13.07 लाख से अधिक है।

टोंक नगर की जनसंख्या 2.53 लाख है, जो ग्रामीण जनसंख्या 2.53 लाख से अधिक है।

सामने के मानचित्र में ग्रामीण व ग्रामीण व ग्रामीण नगरों का गैरशहरी आरक्ष विधि द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| क्र.सं. | जिले का नाम | ग्रामीण जनसंख्या (लाख में) | ग्रामीण नगरों की जनसंख्या (लाख में) |
|---------|-------------|-------------------------------|--|
| 1. | बीकानेर | 13.36 | 4.52 |
| 2. | हनुमानगढ़ | 12.14 | 3.3 |
| 3. | बीकानेर | 10.79 | 5.95 |
| 4. | जयपुर | 13.17 | 5.36 |
| 5. | झुंझार | 15.18 | - |
| 6. | जयपुर | 25.56 | 4.37 |
| 7. | जयपुर | 16.90 | - |
| 8. | जयपुर | 8.06 | - |
| 9. | कटीली | 1.72 | - |
| 10. | सवाईमधोपुर | 9.03 | - |
| 11. | टीका | 11.81 | - |
| 12. | जयपुर | 25.58 | 25.94 |
| 13. | बीकानेर | 18.15 | - |
| 14. | बीकानेर | 22.97 | 4.77 |
| 15. | झुंझार | 19.9 | 9.72 |
| 16. | झुंझार | 4.31 | 0.77 |
| 17. | जयपुर | 18.19 | 1.45 |
| 18. | जयपुर | 13.88 | - |
| 19. | झुंझार | 7.00 | - |
| 20. | जयपुर | 14.98 | - |
| 21. | जयपुर | 13.07 | 8.74 |
| 22. | टीका | 2.53 | - |
| 23. | टीका | 7.82 | - |

| | | | |
|-----|-------------|-------|------|
| 24. | भीलवाड़ा | 15.95 | - |
| 25. | राजसमंद | 8.57 | - |
| 26. | उदयपुर | 14.90 | 4.90 |
| 27. | झुंझार | 10.27 | - |
| 28. | बांसवाड़ा | 13.93 | - |
| 29. | चित्तौड़गढ़ | 15.14 | - |
| 30. | कोटा | 7.31 | 8.38 |
| 31. | बांस | 8.50 | - |
| 32. | झालावाड़ | 10.12 | - |

नोट : सामने की सारणी पर रेखाचित्र बनाइये।

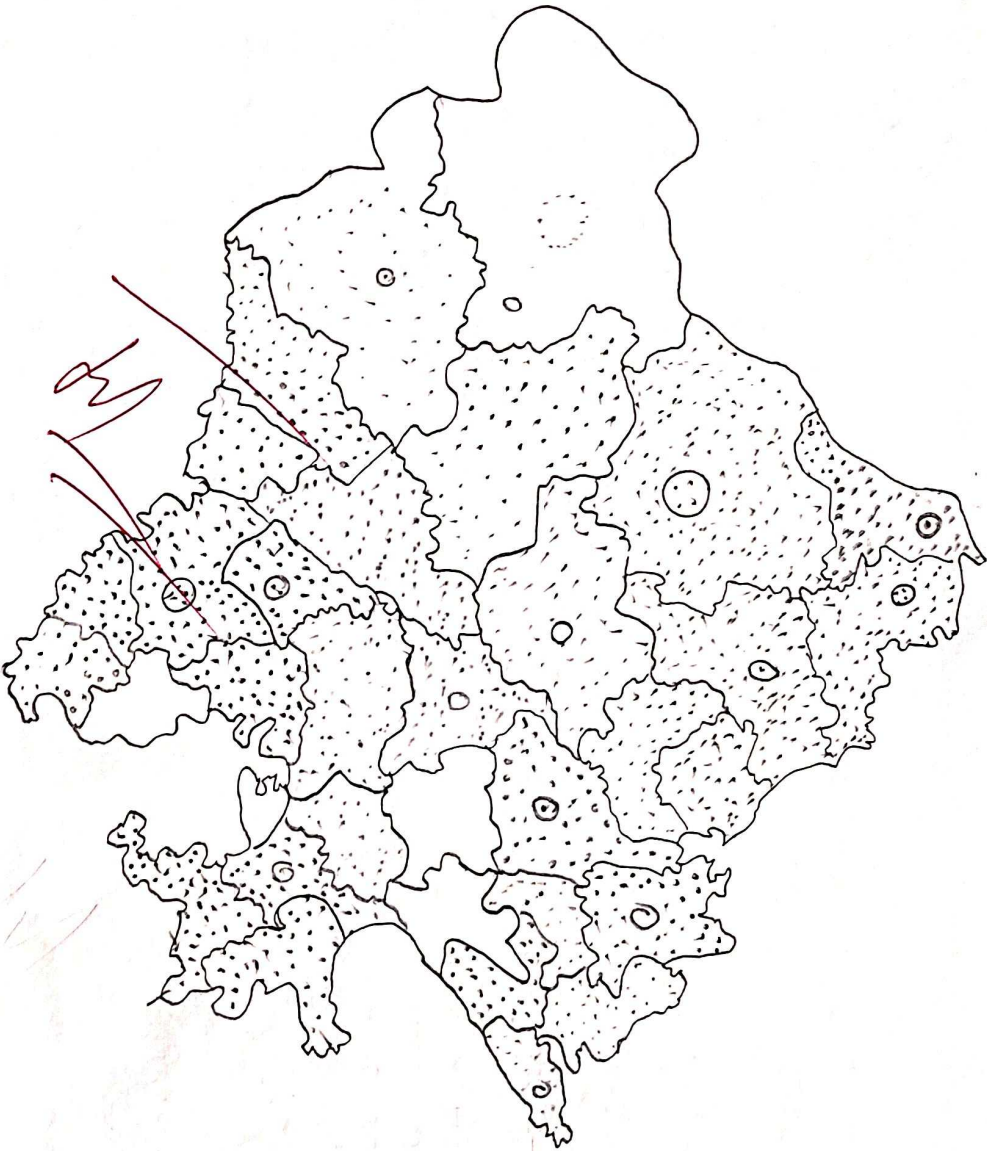
Heading : Spherical Diagram

Rural & Urban Population of Rajasthan, 2001

एक आरेख :-

इस विधि में अक्षरों की सहायता से ग्रामीण जनसंख्या और शहरी जनसंख्या के अंतर को दर्शाया जाता है। यह एक गोलाकार आरेख है जो ग्रामीण जनसंख्या और शहरी जनसंख्या के अंतर को दर्शाता है।

CIRCLES DIAGRAM



Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

अध्यास 2.6 कृषि सम्बन्धी आँकड़ों का निरूपण
निम्नलिखित आँकड़ों को पाई आरेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| क्र.सं. | भूमि का वर्गीकरण | क्षेत्रफल (लाख हैक्टर में) |
|---------|-----------------------------------|----------------------------|
| 1. | वन | 26.05 |
| 2 | कृषि के लिए अग्रान भूमि | 43.05 |
| 3. | परती के अतिरिक्त अन्य अकृष्य भूमि | 66.29 |
| 4 | परती भूमि | 48.59 |
| 5. | कृष्य भूमि | 158.65 |

कुल क्षेत्रफल 342.63 भारत देशीय रूप

1) वन क्षेत्रफल $\rightarrow 26.05 \times 360$
342.63

2) कृषि के लिए अग्रान भूमि $\rightarrow 43.05 \times 360$
342.63

3) परती के अतिरिक्त अन्य अकृष्य भूमि $\rightarrow 66.29 \times 360$
342.63

4) परती भूमि $\rightarrow 48.59 \times 360$
342.63

5) कृष्य भूमि $\rightarrow 158.65 \times 360$
342.63

= 166.69

अध्यास 2.7 फसलों का वितरण
1. राजस्थान में निम्न फसलों के आँकड़ों को (Dot Method) बिन्दु विधि द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| फसल | बाजरा | मक्का | जौ | चना | ज्वार | गैहूँ | चावल | दलहन | तिलहन | गन्ना |
|------------------|-------|-------|-----|------|-------|-------|------|------|-------|-------|
| उत्पादन (टन में) | 1797 | 1015 | 426 | 2074 | 454 | 6880 | 505 | 470 | 209 | 301 |

नोट : सामने की ड्राईशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : DOT METHOD
PRODUCTION OF CEREAL IN RAJASTHAN 2003-04

राजस्थान में निम्न फसलों को सम्बन्धित जिलों में बिन्दु विधि द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

बाजरा - बीकानेर, टोंक, अजमेर, बीकानेर

मक्का - झालावाड़, भारत, अजमेर।

जौ - जयपुर।

चना - जयपुर।

ज्वार - करीमगढ़, बीकानेर, सवाई माधोपुर।

गैहूँ - टोंक।

चावल - जयपुर।

दलहन - जयपुर, सीरोडगढ़, झारपुर।

गन्ना - (बांसवाड़ा)।

गन्ना \rightarrow जयपुर।

2. चित्र विधि से क्या तात्पर्य है?

चित्र विधि :-

चित्र विधि द्वारा विभिन्न प्रकार के सांख्यिकी आंकड़ों को निम्न प्रकार उपचारित करके उनके अर्थों को अधिक स्पष्ट और आसानी से समझने योग्य बनाने के लिए चित्र विधि का उपयोग किया जाता है।

3. चित्र विधि के गुण क्या हैं?

चित्र विधि के गुण :-

1. आंकड़ों को अलग-अलग संकेत द्वारा दर्शाया जाता है जिससे तुलना आसानी से की जा सकती है।
 2. सरलता से देखा जा सकता है।

3. चित्र विधि के द्वारा फसलों का उत्पादन

विवरणों का उत्पादन दिखाने के लिए ग्राफिकल विधि का उपयोग किया जाता है। इससे फसलों का उत्पादन दिखाने के लिए फसलों का उत्तीर्ण चित्र का उपयोग किया जाता है।

4. राजस्थान में अनाजों के आंकड़ों को चित्र विधि द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| अनाज | गेहूँ | बाजरा | चावल | मक्का | चना | ज्वार | जौ | दालें |
|----------------------|-------|-------|------|-------|------|-------|-----|-------|
| उत्पादन (लाख टन में) | 59.00 | 25.5 | 25.5 | 12.5 | 10.5 | 8.5 | 5.0 | 6.0 |
| | 12 | 5 | 5 | 3 | 2 | 1 | 1 | 2 |

नोट : सामने की दृश्यशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : SYMBOL METHOD

PRODUCTION OF CEREAL IN RAJASTHAN 2003-04

वैश्याना = 5 लाख टन

SYMBOLIC METHOD



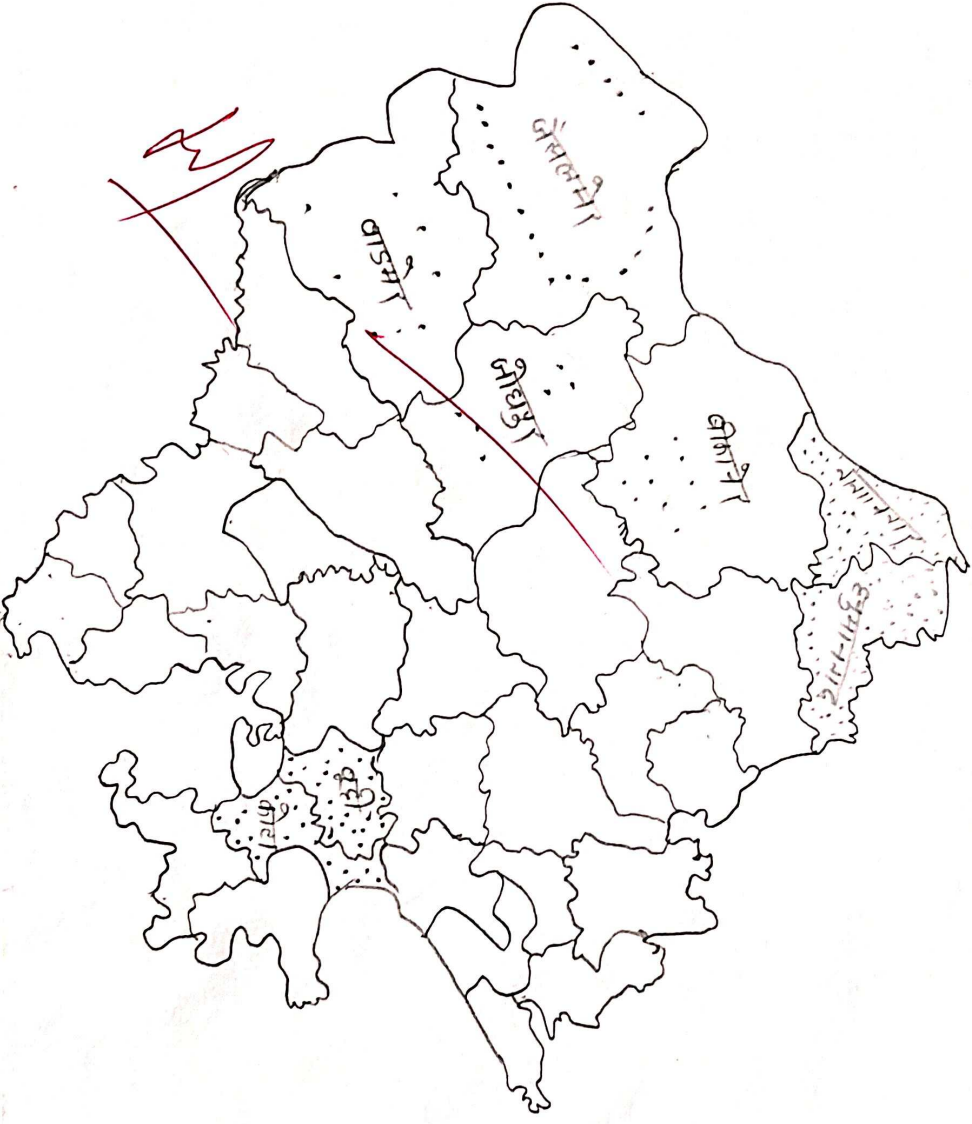
| | |
|-------|---------|
| ସଂକଳନ | ଶାମ |
| ୯ | ମୁଦ୍ରା |
| B | ଶାମ୍ବରୀ |
| C | କାମରୀ |
| M | ୩୮୫୧ |
| CH | କାମ |
| T | କାମ |
| JA | କାମ |
| A | କାମ |

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

DOT METHOD



Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

अभ्यास 2.8 औद्योगिक आँकड़ों का चित्रण

In. M v. Ksh. M BAR Diagram

1. भारत में लोह इस्पात उत्पादन के आँकड़ों को दण्ड आरेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

| इस्पात संयंत्र | इसको | मिलानई | टिस्को | बोकारो | राउरकेला | दुर्गापुर |
|----------------------------|------|--------|--------|--------|----------|-----------|
| सिलिका इस्पात (लाख टन में) | 4.4 | 20.0 | 20.5 | 19.03 | 11.2 | 7.6 |

नोट : सामने की दृश्यांग पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : BAR DIAGRAM

PRODUCTION OF IRON-STEEL IN INDIA 2002-03

दण्ड आरेखों से अल्प-मिन्ट पर मूल्यों की उदरतना तथा अल्प स्तम्भों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। इन आरेखों की साम्य आरेख भी कहते हैं। साम्य आरेख बनाने समय कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है जो निम्न-लिखित हैं-

1. सभी स्तम्भों की व दण्डों की मोटाई समान होनी चाहिए।
2. दण्डों की मोटाई निर्धारण करने के लिए कोई विशेष नहीं है। अपील करना चाहिए कि आधार पर दण्डों की मोटाई की उचित रचना से आकृष्टक चयन है।

3. आरेख से सभी दण्ड समान मध्य के अंतर पर बनाने चाहिए। यह इसी एक दण्ड की मोटाई से कुछ कम रानी जाती है। दण्ड आरेख की प्रकार के होते हैं-

1. सरल दण्ड आरेख।

2. मिश्रित दण्ड आरेख।

आरेखी कुम से निरवरी पर

इसकी - 4.4

दुर्गापुर - 7.6

राउरकेला - 11.2

बोकारो - 19.03

मिलानई - 20.0

टिस्को - 20.5

20.71 - 20.71

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

21.0 - 21.0

2. निम्न आँकड़ों के इष्ट पूर्णिका और ख बनाइये।

| देश | चीन | भारत | पोलैण्ड | द. अफ्रीका | जर्मनी | जापान | स. रा. अ. | रूस |
|---------------------------------------|------|------|---------|------------|--------|-------|-----------|------|
| इस्पात उत्पादन (लाख मीट्रो टन में) | 1663 | 1526 | 915 | 287 | 980 | 1595 | 1885 | 1544 |

नोट : सामने की द्राइशीट पर रेखाचित्र बनाइये।

Heading : BLOCK PILE DIAGRAM

PRODUCTION OF STEEL IN THE WORLD, 2002

चीन = 1663 इस्पात उत्पादन = 1663

भारत = 1526 इस्पात उत्पादन = 1526

पोलैण्ड = 915 इस्पात उत्पादन = 915

द. अफ्रीका = 287 इस्पात उत्पादन = 287

जर्मनी = 980 इस्पात उत्पादन = 980

जापान = 1595 इस्पात उत्पादन = 1595

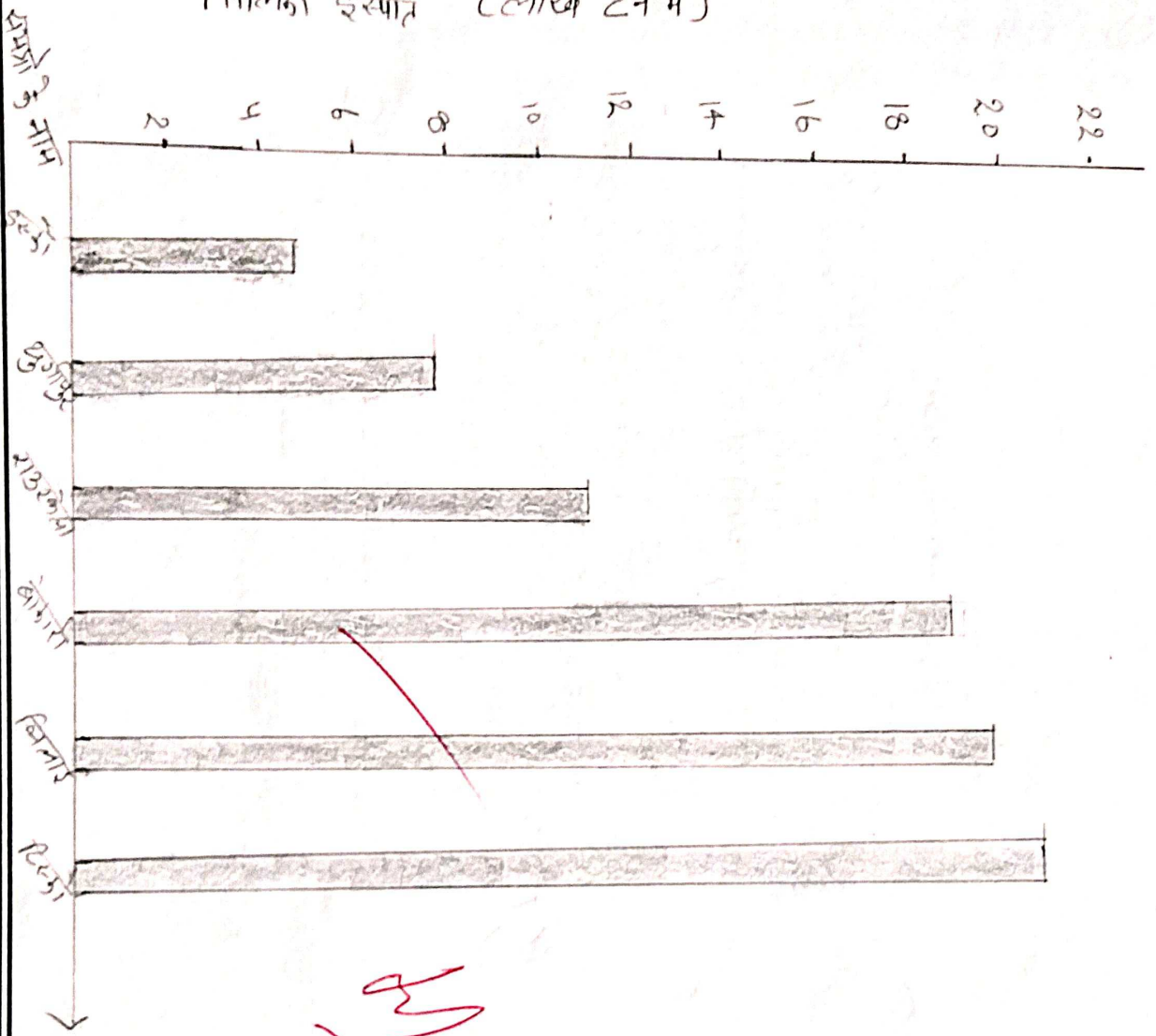
स. रा. अ. = 1885 इस्पात उत्पादन = 1885

रूस = 1544 इस्पात उत्पादन = 1544

रूस = 1544
100 = 15.44

BAR DIAGRAM

सिलिका इस्पात (लाख टन में)



Handwritten signature in red ink.

Student Name: Roll No. Class

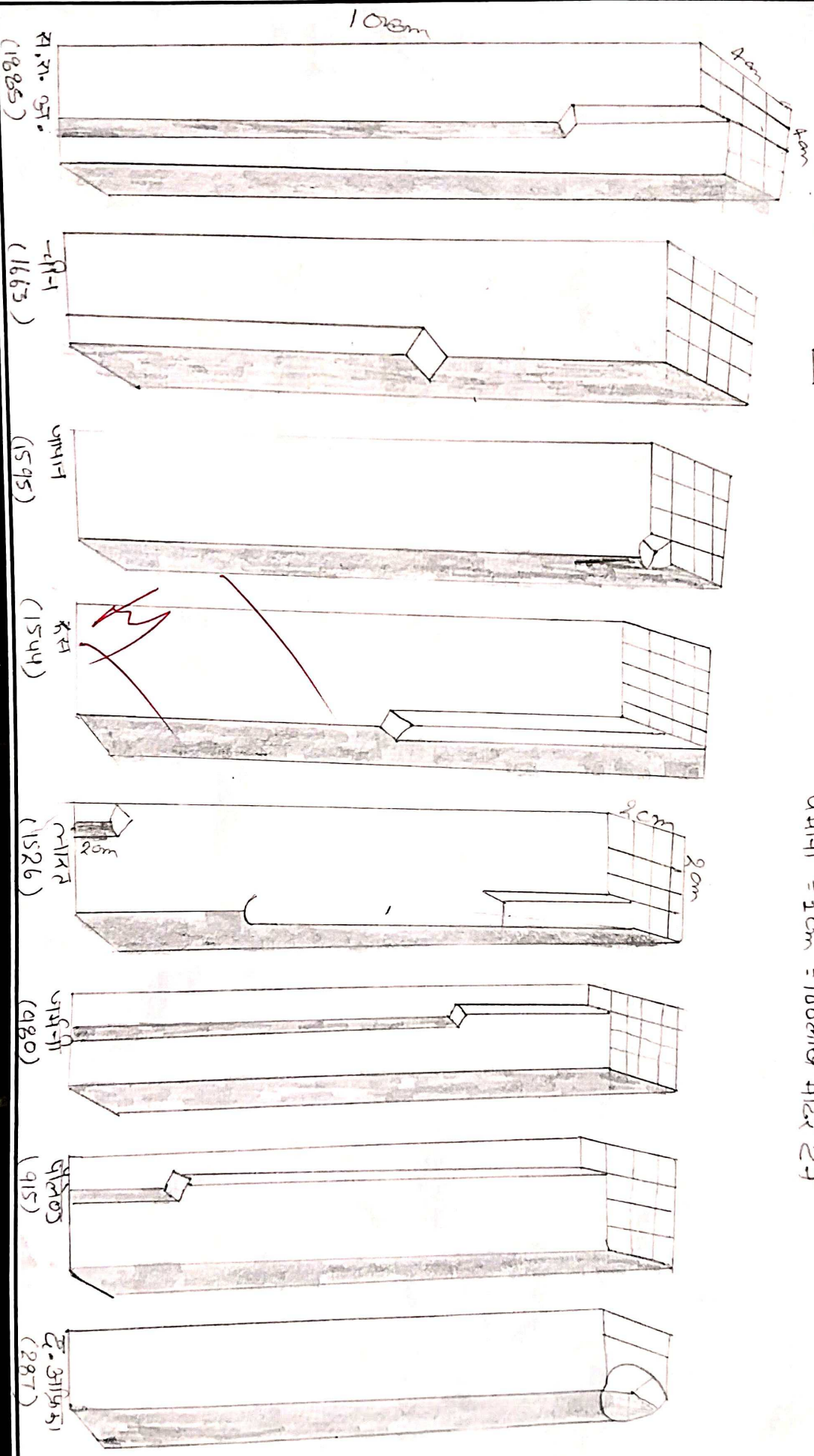
Date

Signature

BLOCK PILE DIAGRAM

एक बॉक्स = 10 मीटर गहराई तक

दीर्घा = 1cm = 100मीटर गहराई तक



Student Name..... Roll No. Class Date Signature.....

अभ्यास 2.9 यातायात सम्बन्धी आँकड़ों का चित्रण
यातायात प्रवाह आरेख (Traffic Flow Diagram)

1. यातायात प्रवाह आरेख किसे कहते हैं?

यातायात प्रवाह आरेख के द्वारा विभिन्न मानसि पर यात्रियों या समान के वैयक्तिक सार्वजनिक और अथवा मासिक प्रवाह प्रदर्शित की जाती है इसमें परिवहन मानसि प्रवाह प्रवाह की मासि के अनुपात में व्यंजित करने के लिए आरेख में गोलीय संकेतों का प्रयोग किया जाता है।

2. मानरेख की परिभाषा लिखिए।

मानरेख :- मानरेख एक विधीय प्रकार का

मानचित्र होता है जिसकी परिभाषा के सम्बन्ध में मतभेद हो इसी प्रकार विद्यार्थी का आरेख रिक्तानु के लिए बनाया जाता है इसलए इस मानचित्र माना या मानरेख मानचित्र होता है।

3. मानरेख के प्रकार कौन-कौन से हैं लिखिए।

मानरेख के प्रकार उक्त हैं -

I. स्थानीय मानरेख

II. अंतरासंग परिभाषा मानरेख

III. सम्प्रदायिक मानरेख

IV. सरल मानरेख

.....

4. यातायात मानरेख के प्रमुख आधार क्या हैं?

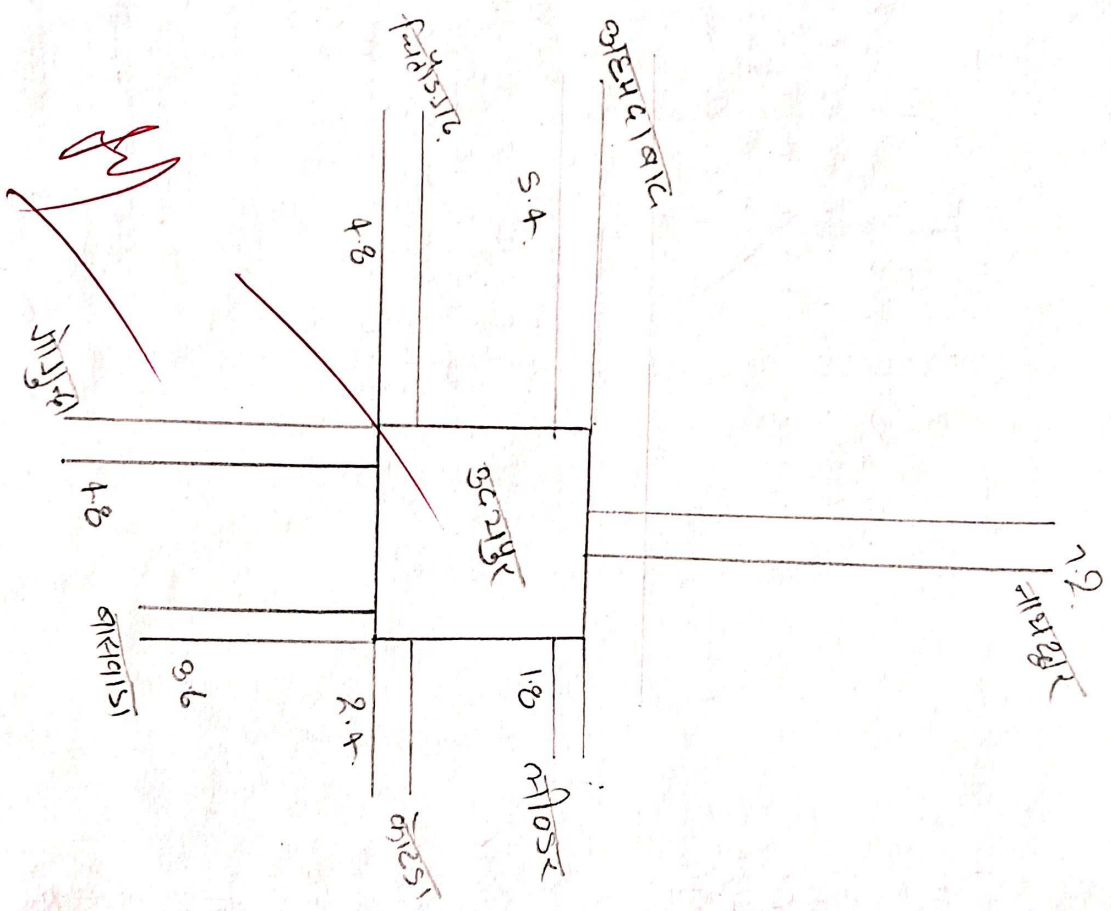
यातायात मानरेख के आधार :- इस आरेख

की रचना किसी हीन सड़क उप रैखगाड़ी मानसि उप किसी भी स्थान से आने-जाने वाले व्यक्तियों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों को जाने वाले समय की आवश्यकता के आधार लिये जाने है इसके लिए सबसे पहले मानचित्र के क्षेत्र का जाल बना कर उपयुक्त मापक लेकर उस समय मानसि पर दुरी निर्धारित कर आरेख का निर्माण किया जाता है।

5. यातायात परिमाण आरेख का महत्त्व लिखिए।

यातायात परिमाण आरेख का महत्त्व :-

मानसि से यात्रियों अथवा समान वैयक्तिक आवश्यक मासिक परिवहन की संख्या या मासि पर मानरेख की मासि रिक्तानु के लिए परिवहन यातायात मासि के प्रवाह के अनुपात से मोटा अथवा पतला बना देने के लिए स्थानों के समय अनुपात निर्धारण की गयी संख्या से महीन संख्याएँ स्वीच्य देती हैं।



Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

3. सह सम्बन्ध

(Correlation)

1. सह-सम्बन्ध किसे कहते हैं?

सह-सम्बन्ध :->

जब क्रम या अधिक शक्तियों में समानता में परिवर्तन होती है, तब इसे सह सम्बन्ध कहते हैं। परिवर्तन की कल्पना इसी शक्ति में भी परिवर्तन होने की प्रकृति प्राप्ति होती है। सह सम्बन्ध शक्तियों सह सम्बन्ध कहलाती है।

2. सह सम्बन्ध ज्ञात करने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं?

सह सम्बन्ध ज्ञान :-

1. प्राप्ति विधियों से रजत क्रिया आता है। और निम्न विधियों से -

1. इस विधि परिसर का सह सम्बन्ध विधि।

2. स्पीयरमैन की कोटी इस विधि।

3. स्पीयरमैन के कोटिक्रम अन्तर विध के गुण व सीमाएं बताइये।

स्पीयरमैन गुण :->

इस विधि में आँकड़ों की कोटी से कोटी की और कोटियों में बाहर आता है। सह सम्बन्ध की सबसे सरलतम विधि मानी जाती है।

2. इस विधि के माध्यम से आँकड़ों की कठपुत्री व निम्न सीमा तथा अन्तराल को स्पष्ट दर्शाया जाता है।

3. इस विधि के माध्यम से किसी कक्षा कक्ष के विद्यार्थियों की रजत तथा कोटिया प्रदान की जा सकती है।

स्पीयरमैन की सीमाएं :->

इस विधि में निम्न नामों आँकड़ों में से या ही से अधिक समान अंक होने पर आदितम विधि से सह सम्बन्ध निकाला जाता है। इस विधि की सबसे कठिनतम समस्या मानी जाती है।

परी का कोटिक्रम समान आ जाए उस समय कोटिक्रम का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है ?

यदि किसी श्रेणी में कोई आंकड़ा दी गयी है तो अधिक बार आ जाने की वजह से अधिक बार आने वाली श्रेणी को परी की श्रेणी में 55, 65, 45, 55, 40, 20, 10, 5 आदि आंकड़ों से 55 कि. गुणवत्ती दे दी जाएगी और सर्वप्रथम कीटि वृत्त निर्धारण हेतु कीटि वृत्त का औसत निकाला जाएगा अतः इस प्रकार कीटि वृत्त निर्धारण करने हेतु 55 इस प्रकार इस विषय के माध्यम से परी का कोटिक्रम समाप्त आने पर कीटि वृत्त निर्धारित किया जाएगा।

5.

निम्न आंकड़ों की सहायता से स्पीयरमैन के कोटिक्रम अन्तर विधि द्वारा सतसम्बन्ध गुणांक ज्ञात करें।

| | | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| X | 8 | 36 | 98 | 25 | 75 | 82 | 92 | 62 | 65 | 39 |
| Y | 54 | 51 | 91 | 60 | 68 | 62 | 86 | 58 | 35 | 49 |

| X | Y | XY | X ² | Y ² |
|----|----|------------------|----------------|----------------|
| 8 | 54 | 432 | 64 | 2916 |
| 36 | 51 | 1836 | 1296 | 2601 |
| 98 | 91 | 8918 | 9604 | 8281 |
| 25 | 60 | 1500 | 625 | 3600 |
| 75 | 68 | 5100 | 5625 | 4624 |
| 82 | 62 | 5096 | 6724 | 3844 |
| 92 | 86 | 7912 | 8464 | 7396 |
| 62 | 58 | 3596 | 3844 | 3364 |
| 65 | 35 | 2275 | 4225 | 1225 |
| 39 | 49 | 1911 | 1521 | 2401 |
| | | $\Sigma XY = 56$ | | |

कीटि (N) = 10

$P-1 = \frac{6(\Sigma XY) - N^2}{N^3 - N}$

$1 = \frac{6 \times 56 - 10^2}{10^3 - 10}$

$1 = \frac{336 - 100}{1000 - 10}$

$1 = \frac{236}{990}$

$1 = \frac{236}{990}$

$$= 1 - 0.33$$

$$= 0.66 \text{ Ans}$$

प्रश्न चरी के मध्य मध्यम स्तर को बतायें
 सह - समझता प्राप्त बात है।

[Handwritten signature]

निम्न आंकड़ों की सहायता से स्पीयरमेन के कोटिक्रम अन्तर विधि द्वारा सह सम्बन्ध गुणांक ज्ञात करें।

| | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| X | 47 | 32 | 52 | 9 | 15 | 64 | 26 | 11 | 55 |
| Y | 17 | 22 | 28 | 12 | 25 | 19 | 24 | 18 | 26 |

| | | | | | | | | | |
|--|------|------|------|-----|-----|------|-----|-----|------|
| X | 47 | 32 | 52 | 9 | 15 | 64 | 26 | 11 | 55 |
| Y | 17 | 22 | 28 | 12 | 25 | 19 | 24 | 18 | 26 |
| ΣX | 47 | 32 | 52 | 9 | 15 | 64 | 26 | 11 | 55 |
| ΣY | 17 | 22 | 28 | 12 | 25 | 19 | 24 | 18 | 26 |
| ΣX^2 | 2209 | 1024 | 2704 | 81 | 225 | 4096 | 676 | 121 | 3025 |
| ΣY^2 | 289 | 484 | 784 | 144 | 625 | 361 | 576 | 324 | 676 |
| ΣXY | 799 | 704 | 1456 | 108 | 375 | 1216 | 624 | 198 | 1430 |
| N | 10 | 10 | 10 | 10 | 10 | 10 | 10 | 10 | 10 |
| $\Sigma X^2 - \frac{(\Sigma X)^2}{N}$ | 1666 | 666 | 1666 | 66 | 166 | 1666 | 666 | 66 | 1666 |
| $\Sigma Y^2 - \frac{(\Sigma Y)^2}{N}$ | 229 | 229 | 229 | 229 | 229 | 229 | 229 | 229 | 229 |
| $\Sigma XY - \frac{(\Sigma X)(\Sigma Y)}{N}$ | 799 | 799 | 799 | 799 | 799 | 799 | 799 | 799 | 799 |

$$P = 1 - \frac{666666}{93 - 9}$$

$$P = 1 - \frac{666666}{93 - 9}$$

$$P = 1 - \frac{666666}{799 - 9}$$

$$P = 1 - \frac{666666}{799}$$

$$P = 1 - \frac{6 \times 4356}{720}$$

720

$$P = 1 - \frac{26136}{720}$$

720

$$P = 1 - \frac{13}{13}$$

उपयुक्त आकषी से निम्न स्तर का पर-
संख्य पाया जाना है।

~~28~~

4. समपटल सर्वेक्षण (Plane Table Survey)

अभ्यास 4.1 समपटल सर्वेक्षण का परिचय

1. समपटल सर्वेक्षण (Plane Table Survey) का क्या अर्थ है?

समपटल सर्वेक्षण :->

समपटल सर्वेक्षण एक ऐसी विधि है जिसमें सर्वेक्षण कार्य द्वारा बनाए गए स्थानों का एक साथ समपटल होता है। यह प्लेन टेबल सर्वेक्षण की मान्यता करने की सबसे सरलतम विधि है। इसका आविष्कार 1570 में हुआ लेकिन इतना समय पित्त गाने पर भी बहुत श्रमता से कोई काम नहीं हुआ है।

2. समपटल सर्वेक्षण में कौन-कौन से उपकरण काम में आते हैं?

समपटल सर्वेक्षण में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है :-
 ① स्लैट टैबल ② एलिवेड ③ स्प्रिण्ट लेवल ④ साइड प्लेन ⑤ ट्रक कम्पास ⑥ ग्रीस या तैल ⑦ सर्वेक्षण चून्च ⑧ ग्रीस ⑨ साइज ⑩ ड्राइव पिन व आल्मीनम ⑪ ड्राइंग उपकरण कागज, पेंसिल, पेन, रबर कटर आदि।

3. एलिवेड के दो भाग कौन-कौन से हैं?

एलिवेड मुख्यतः तीन भागों में विभाजित होता है। इसके दो भागों किनारे पर भीड़ने वाले प्लेन होते हैं। किनारे तकनीक फलक कहते हैं। जिसमें अवलोकन चित्र बना होता है। तथा दूसरे को दण्ड वेरिगा कहा जाता है। जिसमें एलिवेड के धाल बनाए जाते हैं। जिसका इस्तेमाल मुख्य भाग पितल व साजावान की लकड़ी से निर्माण होता है।

4. दृष्टि रेखा किसे कहते हैं?

दृष्टि रेखा :->

इसे एलिवेड के द्वारा निर्धारित किया जाता है। जब हम हीस में नजर फलक में स्थित अवलोकन चित्र के माध्यम से लक्ष्य को देखते हैं। तो एलिवेड के धाल निःसीध में लक्ष्य की तरफ डूब एक सीधी रेखा तिरचने है। जिसे दृष्टि रेखा कहते हैं।

5. चुम्बकीय उत्तर किसे कहते हैं?

चुम्बकीय उत्तर उभयकोण :->

इसे ट्रक कम्पास की स्थापना से निर्धारित किया जाता है। समपटल सर्वेक्षण विधि में सर्वप्रथम ट्रक कम्पास की स्थापना से उत्तर दिशा तय की जाती है। ट्रक कम्पास में N लिखी हुई एक दंड होती है। जो किसी माध्यम में आवरण होता है। चुम्बकीय उत्तर निकालने के दौरान ट्रक कम्पास को हड को स्थिर किया जाता है और दण्ड धाल धुमाने है। तथा दंड एक सीधी रेखा के रूपांतर होने पर ट्रक कम्पास के धाल के एक रेखा एलिवेड से जाती है। जो हमारे उत्तर दिशा को दर्शाती है।

2.

स्थिति निर्धारण का क्या अर्थ है? इसको आवश्यकता क्यों पड़ती है?
स्थिति निर्धारण :->

हिन्दुओं की सहायता से समतल पटल की स्थिति को धार करने की प्रक्रिया को स्थिति निर्धारण कहते हैं।

समल धारों में ->

मैं शक्ति या लिटुआ की संख्या को दर्शाते हैं।
एक विशेष स्थिति को जानने में स्थिति या स्थिति निर्धारण कहलाती है।

3.

त्रिविन्दु समस्या द्वारा दिक्स्थापन को विधियों के नाम लिखिए।

त्रिविन्दु समस्या द्वारा दिक्स्थापन विधि ->

I. व्यापक या अन्वयक ->
-> आगम विधि।

II. आर्द्ध विधि ->
-> असल विधि।
-> धाना विधि।
-> जाय पा मूल विधि।

4.

बेसल को विधि का रेखाकन सहित चयन का जाए।
Plan of The

Heading : Plane Table survey
Resectioning by Graphical Method

नोट : सामने को इंग्लिश में पर बनाइये।

बेसल विधि :->

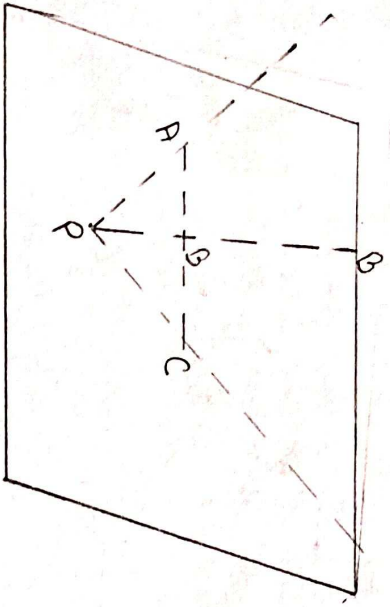
यदि क्षेत्र में A, B, C को ही तीन
ऐसे स्थल बिन्दु हैं जिनके मान में कुमारा
हो, b, c के अनुसार विन्डु प्रकार से प्रस्थापन को
वात किया जायगा।

1. एन टैबल को प्रस्थापन या स्थापित कीजिए
एक स्थल पूर्ण प्रिमुलीकरण कर लीजिए
एलिड हो एरर के सही शीटिड टैबल
की टीला कीजिए और टैबल को पुनः
धरातल पर स्थिति में लक्ष्य कर लैबल
को नस लीजिए।

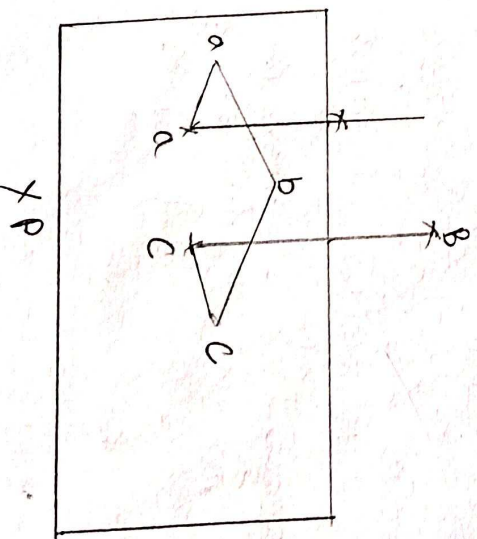
2. आरंभ पटल की टीला कीजिए। एलिड्ड
पटल के सही ररवणर धरातल में टैबल
को ररवणर आरंभ पटल में नस कीजिए।
अब एलिड्ड से ए लक्ष्य करने हुए एक
शिरण शीटिड को टैबल पर नटनी दें।

3. और को सिनाइस ररवण के सही
एलिड्ड को ररवणर ए लक्ष्य करने हुए आरंभ
पटल को नस लीजिए। एलिड्ड पर आरंभ
के सही एलिड्ड को ररवणर में लक्ष्य
करने हुए अपनी ओर वन शिरण शीटिड
को वर ररवण में नटनी यही एलिड्ड में
स्थिति को नस करीगा।

THE PLAN RESECTIONING BY GRAPHICAL LANC'S METHOD



Handwritten signature

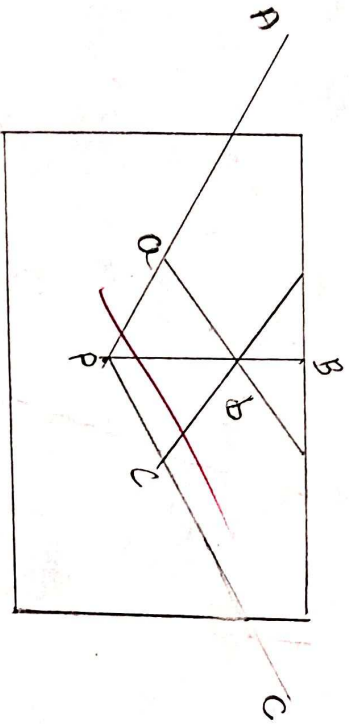
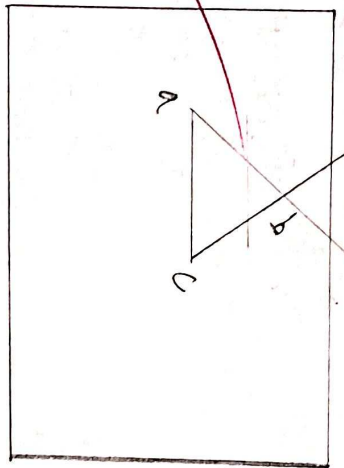
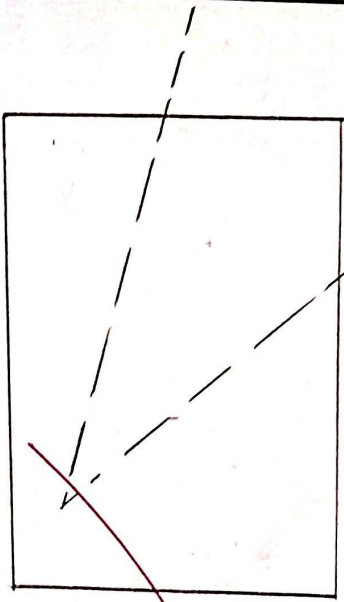


Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

THE PLANE TABLE RESECTION BY GRAPHICAL METHOD



~~AP~~

Student Name..... Roll No. Class

Date

Signature.....

5. यल व शुटि विधि (Tiral and Error Method) में अपनाई जानेवाली प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

नोट : सामने की झांझापीट पर रेखाचित्र भी बनाइये।

Heading :

The Plan of

Resectioning by Graphical Method

Trail and error Method

मान्य च शुटि विधि की प्रक्रिया :->

यह सीखाने

विचरिण की एक सरल विधि है इसे प्र शुटि सिमुल विधि भी कहा जाता है।

1. क्षेत्र टिबुल को P स्थान पर रखकर नम्बर्स तथा अनुमान की सहायता से सही सही प्रथमि-सुरतीकरण कीजिए।

2. तीव दरमी का क्षेत्र से अपना कीजिए और प्लान पर उन्हे ओर्गन कर लीजिए।

3. उल टिबुल को: नरन पर a, b, c पर आल पिय ल्या कीजिए और वर, वर, वर ररताए रतीच लिजिए

4. यदि समीपवर्षा क्षेत्र टिबुल ना पूर्णमिसुरतीकरण हो जाया तो तीवी ररताए P बिन्दु पर काटनी लेजिन सामान्यतः ये एक हीटि सिमुल ना विमाप्य करनी, जिसे शुटि सिमुल कहा जाता है।

5. यदि शुटि सिमुल का विमाप्य हो जाया है तो टिबुल को किला किसी एक दिशा में घुमाकर कस लिजिए अब फिर से a, b, c पर लजिड कर ररताए वरताए कर अपनी सिमुल की लइया कर अपनी A, B, C और ररताए रतीचिए। इस प्रक्रिया को तब तक दोहराएँ जब तक शिटरमा हो धारा है जब तक

तीवी ररताए एक बिन्दु पर गयी गते।

5. ग्रामीण सर्वेक्षण प्रतिवेदन
(Survey Report)

1. अपने मासिक नोट्स का सारांश, अधिक संक्षेप में लिखिए।

ग्राम का स्थिति निम्न की अवस्था :->

शहर की स्थिति
शहरिया की एक सड़क सिमि है इसे अब सुदि
शिवपुर सिमि भी कर जागा है।

1. लोक सुख और पत्थर पर रसक अभाव
को अभाव की समस्या से सी-सी
प्रतिनिधुकीकरण कीविए।

2. शीत लगी का शेर से खाना कीविए और
पानी पर उदर जाकिर कर शक्ति।

3. इस क्षेत्र में एक ओर a/b/c पर काल-शिव
अब सिमि करे था, b/b/c के अर्थ

* ग्रामीण सर्वेक्षण प्रतिवेदन *

शिवपुर - बड़ा

परिचय :->

शहरिया शहर भारत के उत्तर-
पश्चिम भाग में भारत-भारत के रूप में अवस्थित
है जो अपने क्षेत्र में भारत-भारत के रूप में
विभिन्न बजार को रखता है। शहरिया का
पुरा जिला इसी भारत-भारत क्षेत्र का अर्ध-
भाग है। इसी क्षेत्र में भारत-भारत का
से शिवपुर शिव का शिवपुर सर्वेक्षण शिव
भाग है जो कि शिवपुर शिवपुर से
7 Km की दूरी पर स्थित है।

शिवपुर की स्थिति व विस्तार :->

शिवपुर शिव

शहरिया के पुरा जिले में शहरिया
नदसिल से उत्तर-पूरुब में नदसिल शहरिया
से 20 Km की दूरी पर स्थित है शिवपुर
शिव का शिवपुर शिवपुर शिवपुर
नदसिल विस्तार 74.96 Km है शिवपुर
के शहरिया शिवपुर शिवपुर शिवपुर
की शहरिया शिवपुर शिवपुर शिवपुर
शिवपुर का शिवपुर शिवपुर शिवपुर
शिवपुर शिवपुर शिवपुर शिवपुर
शहरिया के शिवपुर शिवपुर शिवपुर
शहरिया के शिवपुर शिवपुर शिवपुर
शहरिया के शिवपुर शिवपुर शिवपुर

MAP OF JHEERWAS

71.51.19

श्री १

श्री २

श्री ३

श्री ४

श्री ५

श्री ६

श्री ७

श्री ८

श्री ९

श्री १०

श्री ११

श्री १२

श्री १३

श्री १४

श्री १५

श्री १६

श्री १७

श्री १८

श्री १९

NOHAR TO TARANAGAR ROAD

Student Name..... Roll No. Class Date Signature.....

इतिहास व नामकरण :- → गाँव के बुढ़ाओं के

माध्यम से यह बताया गया है कि भूबर गौर के क्षेत्र के अगली जानवरों व धूमन्त पशुओं का विशाल उपलब्ध करवाने के लिए इस क्षेत्र में लीहडी खुदाई की तकालीय समय में पंचाल का महारथुण ससाधन है। भारत के विकास के कारण ताकालीय क्षेत्रों के लीहडी के खारे और 2 मरवा अमान 50 बिधा मृमि आधारी है दोडी नदी है। तथा शेष मृमि पर कहराया है के माध्यम से विचाई होने लगी। दिवदन्ती के माध्यम से यह खुवा जाता है कि सर्वप्रथम बालचन्द्र शैलन व गुजराम्य पहिया नामक ही उमदिन अल आकर बसे तापडचाण मट इस गाँव के रूप में बरने लगा और इस गाँव का नाम दोडपास या धीरवास के रूप में लगा लगे।

उत्थापन :- → सर्वेक्षण गाँव धीरवास के

महत्त्व का एक भाग है किन्तु भारत का गाल परिशीलना ने इस गाँव की स्थिति किसे होने के कारण यह गाँव रन के लिए समपटल भिदान के रूप में परिचित परिचित होने लगा है। इस गाँव के आस पास का क्षेत्र प्राचीन समय की धरधरी नदी का दक्षिण भाग माना जाता है जो कि गाँव की लाल खण्ड के कारण पही के बहाव इस की इगिन करता है।

लक्षणा :- → शावरमान के 60% भाग में महत्त्वकीय

लक्षणा पाई जाती है जिसमें शावरमान का खुल खिले में स्थान धीरवास गाँव की लक्षणा महत्त्वकीय विशेषता बरती है।

तापमान :- → धीरवास में ग्रीष्म काल में 40° से

45° से तक सामान्य व शिषण गर्मी के समय 48° से 50° तक अल को उठाने (बालु) की माना जाता है तथा शीतकाल में धीरवास का तापमान से 15° तक सामान्य पाया जाता है किन्तु शीतलहर व बकिलारी के कारण कई बार अल का तापमान 0° से 5° तक भी गिर जाता है जिस स्थानिय भाग में पाला पडना कर्ने है जो फसली को नुकसान पहुंचाता है धीरवास में ग्रीष्म काल में बुलभरी आदिमा चलती है स्थानिय भाषा में इसे लु कर्ने है।

वर्षा :- → धीरवास गाँव में वर्षा अनु - बुलबई

अभारन माट में होती है 20 से 50 cm के बीच बुलबई होती है तथा शीत काल में यह रिसडवर 5-10 cm के बीच बुलबई होती है जो जनवरों को कर्ने हुए मानयुव या परिष्पी विलीय के कारण वर्षा होती है इस समय रबी की फसल हैन यह वर्षा अचुन के समाप्त काय करती है जिस स्थानिय भाषा में भाव कर्ने है इस प्रकार धीरवास में भाग करवरी, माच्य, अल्ल तथा मखर का मरिया भाग सुरता ही ररता है।

प्राकृतिक परंपरि :-> यह गाँव शीतलकटी
 व्ष में ही के कारण घाँस मिम पीपल
 आन आदि इस पामे घानि है इसके अलावा
 इस पामे घानि है रैगडी बर, बिलामनी
 किकी, रीदिश, रवीक, सरकडा आदि जाडियाँ
 पाई घानि है इसके अलावा घाँस नलकुप्रा
 से पानी उपलव्य है के कारण अन्य पालपु
 के पीठ व परपनी भी पाई घानि है निमसे
 गुलाब, रीद, सुपल है ये पीठे लोगो की आगरकत
 के कारण विषम पलपामु में ही है ।
 यहाँ कलदा इस मी पामे घानि है -
 अनार, निब, अमर, घाँस, यीदु
 राहनल, मी है ।

शिक्षा व विमल :->

एरिवास में विमल है
 आपणी चीजना के तहन ग्रामक घरी
 में नल के माध्यम से पानी पहुँचता है
 इसके अलावा विमल के राधमा में नलतुप
 पकी कुट्टे गाँव से पानी की टंकी आदि
 विमल के साधन है ।
 यहाँ शिक्षा विमल है कुट्टे प दुभाराम
 आदि लिखत नदर के माध्यम से शिक्षाई
 सुविधा उपलव्य है ।

संस्कृत व अधिवास :->

संविज्ञ गाँव अधिवास
 में अगना 2 हजार के करीब घरी की संख्या
 है जिसमें सभी घानि के लोग आधुनी युम
 व महिला के साधन निवास करी है ।
 गाँव में 55% कुल व 45% महिला है ।

एरिवास में अगना 66% पक के निर्मित
 घर है निमके सभी घरी के संघर्ष
 संस्क की उमीर रखने है तथा पानी
 विकास है आधुनिक नालिमी का सुभीना
 निमा घाना है सभी घरी में पंचाल
 विद्युत की सुविधा उपलव्य है ।

संस्कृति :->

संविज्ञ गाँव एरिवास में हिन्दु
 व मुस्लिम घानि के लोगो विवास करी है
 यहाँ हिन्दुधर्म में आट रीनी, सुवाग घानिमकी
 संभाष के लोग अनधिकार संस्था में विवास
 करी है तथा नुमीणी के घरा अधिकाशन
 बनाडी घाली घानि है जिसमें हय सुख
 घाली कुनी राधा मदिछाट लटना आठणी व
 नपुपुक वनि आधुनिक वस्ती की धारण करी
 है गानि - विवाध नपुम हिन्दु वाहुय हीने
 के कारण होली व दीपावली को बहुत धी
 लभास के साध मनाने है तथा अन्य हिन्दु
 राधारी की भी नपुमीण सुविधाया राधनि
 गाँव कौञ्जिट एटि से अन्य स्तर में संभाषिन
 गाँव भागा घाला है निमसे आना नबाडी के
 स्तर की शैठिठ संस्थाए विवासाए है निमसे
 आना नबाडी व प्राथमिक विद्यालय व राजकीय
 विद्यालय ।
 राजकीय आलिका विद्यालय राजकीय पुश्च प्राथमिक
 संस्कृति विद्यालय के साथ साथ अक निनी
 शिक्षण संस्थाए संभाषिन है गाँव में विनाग
 वस घली में शिक्षा की उमीर वस्नान आधिक
 वल है निमके परिणाम स्वरूप गाँव में
 अनेक सुवक सुवनिमी का राजकीय सेवाओ

मे सामग प्रकृष्टा है परिभाषा में सर्वोच्च गोंप
परिवार्य का समान विद्या रत्न की ओर
उपस्थित केवल गमा है इसके अलावा गोंप
में समग्रता सुविधा सुख एक उप - स्वारस्य
केवल एक वर्ष विधिरसक केवल पर्यार्य घर
पचामन घर इसके अलावा गोंप कीकी सुविधा
की वरणा राल समीप केक की एक वारसा
सामानि केवल आपसी सेवाएँ दे र है है।

समाय में महिलाओं की स्थिति :->

परिवार्य में महिलाओं की भूमिका हम हम
मान्य समान है बर्तमान में गोंप की सुविधा
ससपच) भी एक महिला है इसके अलावा गमा
में आत्मबानी केवल में महिलाएँ सेवाएँ दे र है है
समाय गोंप की सुविधा समाय में समिकी
आलिका की भी बालकी के वा वरावर जिला
की समी है बालिकाओं की विद्या के समाय समाय
रेलर आदि गतिविधियों में भाग लेने वाले है गोंप
में महिलाओं की वीकालि के समाय गमाभीय
गतिविधियों में भी अनेकों विधि - विवाय जैसे -
रमाँ हार, गजारण वाली - विवाह पुनाव तथा
सर्वजनिक, कामकुमी में भाग लेने की सुवि
सवत्सवत है इसके अलावा गोंप में महिलाएँ
घर समी अलावा गोंप में काम की सुविधा -
समाय अथ उपनिग तथा हति भगनी में भी
संलग्न रहती है उपयुक्त आधारी में हम
कह सकती है कि गोंप में महिलाओं पर
दिसी भी समान की वसुध के बलाएँ सुवि
सवत्सवत है गोंप में बालिकाएँ तथा महिलाएँ
समाय विविध व समयत के आधारा पर
समायने सभी समीय है उपरि समाय

सर्वोच्च की के लिए समान है इसके अलावा
वर्तमान समाय में परिवाराय गोंप की समीक
कुली व महिलाएँ विद्या विभाग तथा विधिरसक
विभाग में शामिल है।

गोंप में कमा 12
तक विद्यालय सचालित है इसके उपरान्त
बालिकाएँ कुछ समय हेतु नगरीकी गमा
पचामन सादवा व नदमील मुख्यालय
नरानगार में स्थित उपयुक्त समीक समायों
में समायनर है।

गमाभीय समरसाएँ एवं समीनाएँ :->

गोंप परिवाराय में कही समसाएँ भी है इसी
गोंप में सुवीना पन्की सडकी व नालियों
का समाय है तथा आसिक एडिट से कामकी
धरी में व बिरवरी हल अवस्था में स्थिति
में समीक समाय व विद्या की सुविधा
नदी है तथा गोंप में कुछ कसके मनान
की है इसके अलावा बालिश के समाय
में गोंप के कुछ समरसाएँ सुख्य है।
इत समाय समायों के अलावा भी गोंप
की वर्तमान समपच मदीय समीकी समाय
है की हारा अनेक राजकीय योजनाओं के समाय
में अनेक गमाभीय समाय का समाय करनी
की लिए समासरण है कि विविध विद्या में आय
की कुछ समायसाएँ समाय की समाय समी है।

सिखन समाय :-

हम यह कह सकती है कि

गोंप में अकाल पड़ने के दौरान अनपढ़ लीजने के लिए किसी भी कोले जैकनिक अवरध्या नहीं है अतः एमार खीरवाण दल समुपणि गोंप का खीरवाण के बार इस निवर्तनी पुद्द्या है कि गोंप की मुखसुन सुविधाएँ ही है जबकि मौरसमी बिमारियु व आपय सुमाने पर किसी भी प्रकार के संसाधन नहीं है।

गोंप को स्वचलित करने के कारण :->

प्यावला सनागौनर कन्सा अदाबिधालय एग कलपना खाटवा B.A. II की अवसरन की दासा है।

खिरवास गोंप महाविधालय की मास की डरी पर स्थित है कन्सा महाविधालय एने के कारण एसाय दल खीरवाण हेतु सजामत में प्रतिशन के कारण तथा एसाय खीरवाण दल की डुक दासाएँ खिरवास खे एने के कारण एसाय खिरवास गोंप का चुनाव भीमा है।

आधुणत एव वीजाधुणत => यहाँ पर औरने लका

हुई और जीवनी औरनी हेतु अलखि एकप धारि कुना एव जगति एहनन ही गहा पर एसन सामान्यानः आधुणत की एहननी है। एह का वैआधुणत बाना - पीजा एहन एहन एनादि यहा के वालकक के अवकुनर हेतु

स्वभार की सुविधा => ग्रहणी देविठिकस धादिससु डक, भाबहुल अरि कम्पयुस धारि द्वारा नियसि का आधुन उवाष एगो रल्या हेतु वेक डिकस हुरा है।

निकषि :-

खिरवास एक विशाल गोंप है। यहाँ की जनसंख्या इधि पर कुणसिख ही आघारित है यहा कि बिहाा पर पंचार प्रसार अति आववमक है यहाँ सारवृत्तिक संसाधन बडलल से हैरवे ने मिलता है यथाव के निम्नानु वरीके से गोंप गाँगा एँच्यो सुन्दर नियमण करला है।